मासिक

गुरमत ज्ञान

ISSN 2394-8485

३/-

आश्विन-कार्तिक संवत् नानकशाही ५५५ अक्तूबर 2023 वर्ष १७ अंक २

सिंघ सभा लहर के निर्माता एवं उत्थानक

नवाब कपूर सिंघ

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

आश्विन-कार्तिक संवत् नानकशाही 555

वर्ष 17 अंक २ अक्तूबर 2023

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर साहिब -143006

फोन : 0183-2553956-60

एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 5

सिंघ सभा लहर सिंघ (संपादकीय आलेख) 6
- स. सतविंदर सिंघ फूलपुर

सिंघ सभा लहर के कारण और प्रभाव 10
—डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ

महान सिक्ख जरनैल : नवाब कपूर सिंघ 13
-डॉ. मनजीत कौर

. . . . सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया 20
-डॉ. गुरनाम कौर

सिक्ख पंथ के महान नायक : बाबा खड़क सिंघ 25
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'

. . . भूखे सिक्ख कैदियों को लंगर छकाने की गाथा 27
-डॉ. राजविंदर सिंघ जोगा

सिंघ सभा लहर और भाई वीर सिंघ 31
- डॉ. धरम सिंघ

सेलुलर जेल अंडमान : पंजाब के स्वतंत्रता संग्रामी-३ 35
-डॉ. परमवीर सिंघ

हरि का नामु अंम्रित रसु चाखिआ 43
-डॉ. परमजीत कौर

खबरनामा 48

गुरबाणी विचार

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥
परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥
विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥
कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥
वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि बिओग ॥
नानक कउ प्रभु राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥
कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ॥ ९ ॥ *(पन्ना १३५)*

बाणी के बोहिथ पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में कार्तिक मास की सुहावनी बहार में मनुष्य-मात्र को अपना अमूल्य मनुष्य-जन्म सफल करने का मार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि यदि जीवन की कार्तिक मास की सुहावनी ऋतु में परमात्मा के मिलाप हेतु जीव कर्म करने से अथवा नाम-सिमरन से वंचित रह गया तो इसमें किसी का क्या दोष है? यह दोष उस जीव पर ही लागू होना चाहिए जो प्राय: अनुकूल परिस्थितियां होने के बावजूद भी प्रभु-नाम जपने की दिशा में गतिशील नहीं होता। सतिगुरु जी स्पष्ट करते हैं कि ऐसी स्थिति में जीव परमात्मा को भूल जाता है और परमात्मा के भूल जाने से ही जीव को सभी प्रकार के अर्थात् शारीरिक और मानसिक रोग लग जाते हैं। प्रभु से मुंह मोड़ लेने से जन्म-वियोग अर्थात् अत्यंत लंबा बिछोड़ा मिलता है। प्रभु-नाम को भूल कर जीव माया के भोग भोगता है जो कि प्रभु भूल जाने पर यकदम कड़वे लगने लग जाते हैं। जीव की ऐसी दुखदायक स्थिति किसी बाहरी प्रयास से बदल नहीं सकती। वह किसके पास प्रतिदिन अपना दुख व्यक्त करे? मात्र बाहरी प्रयास फलदायक नहीं होते और प्रभु मालिक ही जीव के उद्धार का संयोग बनाता है। अच्छे भाग्य हों, तभी मालिक से मिलाप होता है, जिससे जन्मों का वियोग भी दूर हो जाता है। सतिगुरु प्रभु से विनती करते हैं कि हे नानक बंधनों से मुक्त करने वाले मालिक! मुझको इस भौतिक संसार की माया के प्रभाव से बचा लेना। यदि कार्तिक की सुहावनी ऋतु में अच्छे मनुष्यों का साथ मिल जाए तो प्रभु से जुदा रखने वाली सारी चिंताएं दूर हो जाती हैं।

संपादकीय

इतिहास का पठन-पाठन : हमारा नैतिक कर्त्तव्य

श्री गुरु नानक देव जी ने आदर्श मानव की संरचना के लिए नानक निर्मल पंथ चलाया। परवर्ती गुरु साहिबान ने इस न्यारे पंथ के प्रचार-प्रसार के लिए लंबे संघर्ष किए, दो गुरु साहिबान को शहादत भी देनी पड़ी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खंडे-बाटे की पाहुल छका कर खालसा पंथ सजाया और न्यारी रहित मर्यादा (सिक्ख आचरण संहिता) प्रदान की। खालसा पंथ के न्यारे वजूद को सदास्थिर रखने और जुल्म का नाश करने के लिए १८वीं सदी में सिंघों को लम्बा समय संघर्ष करना पड़ा। १९वीं सदी के दशकों में जब सिक्खों में मर्यादा के पक्ष से कुछ अवचेतनता आई, आर्य समाज की तरफ से सिक्ख धर्म पर हमले होने लगे, पंजाब में ईसाईयत का प्रभाव बढ़ने लगा, तो सरदार ठाकुर सिंघ संधावालिया तथा अन्य चेतन सिक्खों ने विचार कर सिक्ख पंथ में पैदा हुई अंदरूनी और बाहरी चुनौतियों से निपटने के लिए १ अक्तूबर, १८७३ ई. को 'सिंघ सभा' की स्थापना की। 'सिंघ सभा लहर' एक इंकलाब की लहर साबित हुई। इसके प्रभावास्वरूप सिक्खों में अपने अतुल इतिहास, सिद्धांत, मर्यादा एवं परंपरा के प्रति नयी जागृति पैदा हुई। 'सिंघ सभा' ने सिक्खों के सर्वपक्षीय विकास के लिए अति महान कार्य आरंभ किए तथा अनेक प्राप्तियाँ हासिल कीं। 'सिंघ सभा' की कोशिशों का सदका सिक्ख पंथ में पुन-र्जागृति की लहर पैदा हुई। इस जागृति का सदका ही आगे चल कर गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर, बब्बर अकाली लहर पैदा हुईं, जिससे गुरुद्वारा साहिबान को महंतों से और देश को अंग्रेज़ों के चंगुल से आज़ाद करवाया जा सका। सिंघ सभा लहर ने कई उतराव-चढ़ाव में से गुज़रते हुए सिक्ख पंथ के सर्वपक्षीय विकास के लिए गौरवमयी कार्य किए हैं। सिंघ सभा का १५० वर्षीय स्थापना दिवस मनाते हुए इससे प्रेरणा लेकर पंथ के उज्जवल भविष्य के लिए यत्नशील रहना चाहिए।

सर्वप्रथम हमें खुद 'सिंघ सभा' के उद्‌भव, विकास एवं परिणाम के बारे में उत्सुकतापूर्ण जानना चाहिए। ऐसे में हमें अपने पुरखों, हमारी कौम के साहसी विद्वान वीरों, लेखकों आदि के बारे में जानकारी का खजाना हासिल होगा। यही अमूल्य खजाना फिर हमें अपने बच्चों आदि में भी बांटना चाहिए अर्थात् उन्हें भी सिंघ सभा लहर की उपलब्धियों आदि के बारे में अवगत कराना चाहिए। हमारे पुरखों ने, हमारे कौमी हीरों ने जो इतिहास सृजित किया है, उससे खुद अवगत होते हुए अपने पारिवारिक सदस्यों, नव पीढ़ी को बताना हमारा नैतिक कर्त्तव्य बनता है।

समय की मांग है कि जहां हमें शारीरिक रूप से बलिष्ठ बनना होगा वहीं अपने इतिहास का पठन-पाठन कर, अपनी विरासत से परिचित होकर अपनी जानकारी के अंबार को भी ऊंचा उठाना होगा, ताकि हम अपने पर हमलावर लोगों का शारीरिक व मानसिक दोनों स्तर पर सामना कर उन्हें चारों खाने चित्त कर सकें।

संपादकीय आलेख

सिंघ सभा लहर

बहुत कुछ हासिल कर लिया, बहुत कुछ हासिल करना शेष है

*- स. सतविंदर सिंघ फूलपुर**

सिक्ख संस्थाओं को नानक निर्मल पंथ वाले रूहानी मिशन की निरंतरता में देखने के यत्न होने चाहिए। सिक्ख संस्थाएं गुरु-युक्ति की निरंतरता हैं। ये गुरु के पद-चिह्नों पर सिक्खी का पद-चिह्न हैं। गुरु अपने रूहानी मिशन को तरोताजा रखने के लिए अपने सिक्खों पर कृपा कर सिक्ख संस्थाओं की स्थापना करवाता है और उन्हें पंथ का नेतृत्व प्रदान करता है।

श्री गुरु नानक देव जी ने लोगों को वहमों, भ्रमों और पाखंडों में से निकाल कर स्वस्थ जीवन-युक्ति प्रदान की। धार्मिक आडंबरों और बहुदेव-पूजा की तरफ से हटा कर एक अकाल पुरख की भक्ति का मार्ग समझाया। भाई मरदाना जी को साथ लेकर सिक्खी की प्रचार लहर (उदासियों) का आरंभ किया। गुरु जी की इस स्वस्थ जीवन-युक्ति को धारण करने वाले गुरु के सिक्ख कहलवाए। दसम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना कर ख़ालसे की रहित मर्यादा निर्धारित की :

जब लग खालसा रहे निआरा।
तब लग तेज दीओ मैं सारा।।
जब इह गहे बिपरन की रीत।
मैं न करों इन की प्रतीत।। (सरबलोह ग्रंथ)

समय के हालात के कारण १९वीं सदी के गत दशक में सिक्ख पंथ पर कुछ अप्रिय घटनाएं आ घटीं। कुछ आंतरिक कारण भी थे—— सिक्ख कौम में बढ़ रहा देहधारी गुरु-डम, सिक्ख रहित मर्यादा (सिक्ख आचरण-संहिता) में बेपरवाई और सिक्खी रीति-रिवाज़ों में मिलावट के लिए श्री दरबार साहिब की परिक्रमा में की जाती मूर्ति-पूजा, घंटा बजाना, आरती उतारना, पंडों द्वारा पत्रियाँ, टेवे आदि पढ़ने वाली असहनीय विप्रवादी रस्में। बाहरी कारण थे—— आर्य समाज के लोगों और ईसाई मिशनरियों की तरफ से सिक्खी को कमजोर करना।

पंथ-दर्द रखने वाले लोग इस सब घटनाक्रम से चिंतित थे। जैसे शांत समुद्र में भूकंप व ज्वालामुखी समुद्र में बड़ी लहरें पैदा करने का कारण बनते हैं, इसी प्रकार श्रद्धा राम फिलौरी और दयानंद द्वारा गुरु साहिबान के प्रति किये जा रहे झूठ प्रचार और ईसाई प्रभाव तले चार सिक्ख विद्यार्थियों द्वारा ईसाई बनने के फ़ैसले ने सिक्खों में हड़कंप पैदा कर दिया। पंथ-दर्दियों के मन में आक्रोश का ज्वालामुखी फटा। सरदार ठाकुर

**संपादक, गुरमति ज्ञान तथा गुरमति प्रकाश, फोन : ९११४४-११४८४*

सिंघ संधावालिया तथा अन्य सजग सिक्खों ने विचार कर सिक्ख पंथ में पैदा हुई अंदरूनी और बाहरी चुनौतियों को दूर करने के लिए १ अक्तूबर, १८७३ ई. को 'सिंघ सभा' की स्थापना की। यह सिंघ सभा लहर समुद्री लहर की भांति बलशाली लहर थी, जिसने विप्रवादी मिलावट को बाहर निकाल कर सिक्खी समुद्र की निर्मलता को बरकरार रखा।

अब सिक्ख हयाती की बागडोर सिंघ सभा के हाथ में थी। सिक्ख-वजूद की स्थिरता और विलक्षणता बनाए रखने के लिए स. ठाकुर सिंघ संधावालिया, बाबा खेम सिंघ बेदी, प्रो. गुरमुख सिंघ, ज्ञानी गिआन सिंघ, ज्ञानी दित्त सिंघ, कँवर बिकरम सिंघ, भाई माईआ सिंघ, भाई जवाहर सिंघ, सर अतर सिंघ भदौड़, भाई कान्ह सिंघ नाभा आदि सिक्खों ने सराहनीय प्रयास किए। इन सिक्खों के सामूहिक प्रयास से सिक्ख धर्म की प्रफुल्लता के लिए सिक्ख इतिहास, सिद्धांत, मर्यादा, सिक्ख परंपरा, गुरमति संस्कार, पंजाबी भाषा आदि का प्रचार हुआ। सिक्खों के लिए धार्मिक और सांसारिक-विद्या, स्त्री-विद्या आदि का प्रसार किया गया। सिक्ख ऐतिहासिक स्रोत-ग्रंथों की सम्पादना और विलक्षण सिक्ख अस्तित्व को दर्शाता सिक्ख साहित्य तैयार करवाया। गाँवों, शहरों, कसबों में सिंघ सभाएं स्थापित की गईं। बाद में पंजाब और भारत में सिंघ सभा गुरुद्वारे स्थापित हुए, जिससे पूरे देश में सिक्खी का प्रचार बढ़ा। सिंघ सभा ने सिक्खों की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक आदि समस्याओं के हल के लिए प्रयत्न किये।

शैक्षिक क्षेत्र में ख़ालसा कॉलेज, श्री अमृतसर साहिब और चीफ़ खालसा दीवान सिंघ सभा की बहुत बड़ी प्राप्ति है। खालसा कॉलेज विद्या के प्रसार और अपनी भवन-निर्माण कला के कारण आज विश्व भर में प्रसिद्ध है। चीफ़ खालसा दीवान ने सिक्खों में विद्या के प्रसार के लिए बड़े-बड़े प्रयास किये हैं और कर रहा है। लोक-कल्याण के लिए चीफ़ ख़ालसा दीवान द्वारा सेंट्रल खालसा यतीमखाना, सूरमा (दृष्टिहीन) सिंघ आश्रम, वृद्ध आश्रम आदि चलाए जा रहे हैं।

सिंघ सभा द्वारा कौम में पैदा की गई जागृति के कारण ही गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर (अकाली लहर), बब्बर अकाली लहर का उद्भव हुआ। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और शिरोमणि अकाली दल जैसी पंथक संस्थायें वजूद में आईं। शिरोमणि अकाली दल ने सिक्खों के राजनैतिक हकों के लिए आवाज़ उठाई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिंघ सभा वाले मिशन को अति संजीदगी के साथ निभाती आ रही है। गुरु साहिबान के नक्श-ए-कदमों पर चलते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्खी के प्रचार-प्रसार, गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध, सिक्ख रहित मर्यादा, गुरमति सिद्धांतों की पहरेदारी, सिक्ख मसलों की पैरवी, विद्या के प्रसार तथा लोक-कल्याण के कार्य के लिए निरंतर यत्नशील है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रयास से लंबे संघर्ष के बाद १९४५ ई. में पंथ-प्रवानित

सिक्ख रहित मर्यादा तैयार हुई। इसे सिंघ सभा द्वारा पैदा की गई सिक्ख पुनर्जागृति द्वारा औऱ सिंघ सभा के गुरमति मर्यादा वाले आशय की संपूर्णता समझा जा सकता है। इसके अस्तित्व में आने से सिक्ख रीति-रिवाजों में मिलावट की कोई गुंजाइश शेष नहीं रह गई, बशर्ते कि सिक्ख इसे पढ़ें और इस पर अमल करें।

सिक्ख रहित मर्यादा में विप्रवादी रस्मों के त्याग के बारे में बड़ी स्पष्ट हिदायत है। 'गुरुद्वारे' स्कंध में लिखा है—— धूप या दीये जला कर आरती करना, भोग लगाना, ज्योति जगाना, घंटा बजाना आदि कर्म गुरमति के अनुसार नहीं। (ह) . . . गुरुद्वारे में मूर्ति-पूजा या गुरमति के विरुद्ध कोई अन्य रीति या संस्कार न हो, न ही कोई अन्य मत का त्योहार मनाया जाए। 'गुरमति रहिणी' स्कंध में स्पष्ट किया है—— (अ) एक अकाल पुरख के बिना किसी देवी-देवता की उपासना नहीं करनी। (अ) अपनी मुक्ति का दाता और इष्ट केवल दस गुरु साहिबान, श्री गुरु ग्रंथ साहिब तथा गुरु साहिबान की बाणी को मानना। (इ) दस गुरु साहिबान को एक ही ज्योति का प्रकाश रूप करके मानना। (ई) जात-पांत, छूत-छात, यंत्र-मंत्र-तंत्र, शगुन, तिथ, मुहूर्त, ग्रह, राशि, श्राद्ध, पित्तर, ख्याह, पिंड, पत्तल, दीया क्रिया-कर्म, होम, यज्ञ, तर्पण, सिखा सूत, भद्दण, एकादशी, पूर्णमाशी आदि के व्रत, तिलक, जंञू (जनेव), तुलसी, माला, गोर, मठ, मढ़ी, मूर्ति-पूजा आदि भ्रम-रूप कर्मों पर विश्वास नहीं करना। (पृष्ठ १९-२०)

वर्तमान समय में सिक्ख रहित मर्यादा की रौशनी में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा अन्य सिक्ख संस्थाओं द्वारा किए जा रहे निरंतर सिक्खी के प्रचार के कारण अब विप्रवादी प्रभाव वाला कोई अंदरूनी ख़तरा नहीं रहा। गुरुद्वारा साहिबान में गुरमति मर्यादा के अनुसार मर्यादानिभाई जा रही है, मगर सिंघ सभा की स्थापना के १५० वर्ष बीत जाने के बाद पंथ के सामने बाहरी चुनौतियां आज भी उसी तरह बरकरार हैं। कहा जा सकता है कि सिक्ख पंथ ने सिंघ सभा की उमंगों वाला आधा रास्ता तय कर लिया है, मंजिल के लिए सफ़र जारी है।

गत कुछ वर्ष से देश में पंथ-विरोधी गतिविधियों में और भी इजाफा हुआ है। आर्थिक पक्ष से कमज़ोर लोगों को लुभावने लालच देकर किया जा रहा ईसाईयत का प्रचार और इसकी आड़ में पंजाब में पैदा किया जा रहा पाखंडवाद चिंता का विषय है। देश में स्कूलों/कॉलेजों के पाठ्यक्रम में सिक्ख इतिहास को बिगाड़ कर पेश किया जा रहा है। सुनियोजित साजिश के अंतर्गत श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के सम्बंध में गुमराहकुन प्रचार किया जा रहा है। पंजाब में ग़ैर-सिक्ख परिवारों में किसी गुप्त एजंडे के अंतर्गत अपने बच्चों को हिंदी बोलने के लिए कहा जा रहा है। केंद्र की पंजाब और सिक्ख विरोधी नीति के अंतर्गत पंजाब की नौजवानी को नशों की दलदल में धकेला जा रहा है। सिक्खों के प्रति नफ़रत के एजंडे के अंतर्गत भारतीय फ़िल्मों में सिक्खों को मज़ाक के पात्र, चरित्रहीन एवं गद्दार तक के किरदार में पेश कर सिक्खों की किरदारकुशी की

जा रही है। यू. सी. सी. नामक कानूनों की आड़ में बहु-संस्कृति का विनाश करने की तैयारी है। सिक्खी भेस में सरकारों द्वारा पाले हुए श्रद्धा राम फिलौरी तथा दया नंद की विचारधारा वाले लोगों से सिक्ख इतिहास को सनातनी रंगत दिला कर सिक्ख इतिहास के न्यारेपन को धुंधला करने की कोशिश की जा रही है।

पंथ-विरोधी लोगों की ऐसी साजिशों को नाकाम करने के लिए आज एक मज़बूत लहर बन कर मैदान में उतरने की आवश्यकता है। पंथ-विरोधी कलमघसीट लोगों के साथ दो हाथ करने के लिए आज ज्ञानी दित्त सिंघ, भाई कान्ह सिंघ जैसे जागृत एवं स्वाभिमानी सिक्ख विद्वानों की भी ज़रूरत है।

सिंघ सभा का १५० वर्षीय स्थापना दिवस मनाते हुए उससे प्रेरणा लेकर सिक्ख संस्थाओं को बुलन्दियों की तरफ ले जाने के लिए यत्नशील होना चाहिए। सिक्ख संस्थाओं को नानक निर्मल पंथ वाले रूहानी मिशन की निरंतरता में देखने के यत्न होने चाहिए। सिक्ख संस्थायें गुरु- युक्ति की निरंतरता हैं। ये गुरु के पद-चिह्नों पर सिक्खी का पद-चिह्न हैं। गुरु अपने रूहानी मिशन को तरोताजा रखने के लिए अपने सिक्खों पर कृपा कर सिक्ख संस्थाओं की स्थापना करवाता है और उन्हें पंथ का नेतृत्व प्रदान करता है।

आज आवश्यकता है, गुरसिक्खी जीवन वाले, पंथ-दर्द रखने वाले नाम-बाणी के रसिया, विशुद्ध किरदार वाले, पंथ-परस्त, बुद्धिजीवी सिक्ख संस्थाओं के मार्गदर्शक बनने व सिक्ख राजनीति को धर्म की छत्र-छाया में प्रफुल्लित होने का अवसर प्रदान करने की। याद रहे कि सिंघ सभा लहर के संचालकों में बड़ी संख्या सिक्ख बुद्धिजीवियों की थी, जिन्होंने उच्च कोटि के गुरमति साहित्य की रचना की, सिक्खी विचारधारा वाले अख़बार, रसाले शुरू कर सिक्खों की न्यारी पहचान, सिद्धांत, इतिहास, मर्यादा एवं सिक्ख संस्कृति का प्रचार किया। मौजूदा समय में उक्त आदर्शों की अति आवश्यकता है। एक और विशेष बात, सिंघ सभा लहर को गाँवों, शहरों कसबों में आम लोगों ने पूर्ण सहयोग दिया। आज सिक्खों के मन में अपनी सिक्ख संस्थाओं के प्रति अविश्वास पैदा होना गहन चिंता का विषय है। वास्तव में अविश्वास पैदा करना पंथ-विरोधी शक्तियों की सोची-समझी साजिश है। कुछ कारण और भी होंगे। नेताओं में पंथ-परस्ती की भावना इस अविश्वास को दूर कर सकती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारी सिक्ख संस्थाएं पंथक शक्ति का आधार हैं। इनमें अविश्वास पंथक हित में नहीं।

सिंघ सभा लहर के संस्थापकों ने पंथ-परस्ती की भावना से सिक्खी के लिए बहुत कुछ हासिल कर लिया था, बहुत कुछ हासिल करना हमारे लिए शेष है। अपने न्यारे अस्तित्व को कायम रखने के लिए आपसी अंदरूनी मतभेद मिटा कर सभी सिक्ख संस्थाओं को सामूहिक रूप से प्रयत्न निरंतर जारी रखने चाहिए। इस सफ़र की मंजिल विनम्र खालसा राज है।

सिंघ सभा लहर के कारण और प्रभाव

-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ*

सामान्यतः संसार के प्रत्येक धर्म का प्रादुर्भाव विचारों के गर्भ से हुआ है। महापुरुषों के वैचारिक दर्शन ने उनके अनुयाइयों के समूह गठित किये। उन समूहों ने विचारों के प्रचार- प्रसार का तंत्र निर्मित किया, जिससे धर्म का विचार एक संस्थागत धर्म के रूप में विकसित होता चला गया। संस्थागत हुए बिना विचार, दर्शन का प्रसार संभव नहीं होता। विडंबना यह भी है कि जब कोई विचार संस्थागत हो जाता है, संस्थागत दोष, जैसे स्वार्थ और अज्ञान उस विचार को प्रभावित करने लगते हैं, जिससे विचार की मौलिकता विकृत होने लगती है। इस तरह संस्थागत होना किसी धर्म का अपरिहार्य दोष बन जाता है।

सिक्ख धर्म, गुरु साहिबान के आध्यात्मिक ही नहीं, पूर्ण जीवन-दर्शन से उपजा और गुरु साहिबान के काल में ही इसे संस्थागत स्वरूप प्रदान करने की प्रक्रिया आरंभ हो गई थी। स्थान-स्थान पर सिक्ख संगत गठित हुई, धर्म प्रचार हेतु प्रचारक भेजे गये, प्रचार-केन्द्रों (मंजियों) की स्थापना हुई, बाणी को संकलित कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का स्वरूप प्रदान किया गया, श्री हरिमंदर साहिब और श्री अकाल तख्त साहिब का निर्माण हुआ। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के काल में जब तंत्रगत दोष सामने आने लगे तो उन्होंने मसंद-प्रणाली को भंग कर दिया। उनके द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई पर आसीन करना भी धर्म के मूल स्वरूप को अक्षुण्ण रखने का एक महान कदम था।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ज्योति-जोत समाने के पश्चात सिक्ख धर्म को नित्य नई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। मुगल काल में सिक्ख निरंतर युद्धरत रहे। बड़ी संख्या में सिक्खों के बलिदान हुए और सिक्ख पंथ के अस्तित्व पर ही संकट के बादल मंडराने लगे थे। महाराजा रणजीत सिंघ का शासन-काल सभी धर्मों का सुखद काल था, किन्तु यह महाराजा के राज्य की सीमाओं के अंदर ही था। शेष भारत पर ब्रिटेन राज स्थापित होने के कारण स्थितियां बदलने लगी थीं। उधर अंग्रेजों ने अपना राज्य स्थापित होते ही ईसाई धर्म का प्रचार करना आरंभ कर दिया और विभिन्न ढंग से स्थानीय लोगों को आकर्षित करने लगे। महाराजा रणजीत सिंघ के देहांत के बाद उनके राज्य को अंग्रेजों ने सन् १८४९ में अपने राज्य में मिला लिया। पूरे भारत पर उनका शासन स्थापित हो गया। भारत तेजी से पश्चिम की संस्कृति से परिचित हो रहा था। विशेष रूप से युवा वर्ग में ईसाई धर्म और विदेशी संस्कृति के प्रति आकर्षण उत्पन्न हो रहा था। महाराजा रणजीत सिंघ के पुत्र महाराजा दलीप सिंघ को तो अग्रेजों ने छल-कपट से ईसाई धर्म ग्रहण करवा दिया।

इस परिदृश्य ने देश के जाग्रत वर्ग को चिंतित कर दिया। धर्म में आ चुकी विकृतियों को दूर करने के लिये सुधारवादी अभियान आरंभ हुए। पंजाब में आर्य समाज आंदोलन का काफी प्रभाव पड़ने लगा। सिक्ख धर्म की मर्यादा बनी रहे और अपने धर्म की विशेषताओं के प्रति उत्सुकता और भावना उत्पन्न हो, इसके लिये सिक्ख बुद्धिजीवी सक्रिय हो गये। सन् १८७३ के जुलाई महीने में सिक्ख

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९

नेताओं— सरदार हरषा सिंघ धूपिया और सरदार ठाकुर सिंघ ने श्री अमृतसर साहिब के बुंगा मजीठीया, श्री दरबार साहिब में एक बैठक आयोजित की, जिसमें सभी प्रमुख सिक्ख पदाधिकारियों, गुरुद्वारों के ग्रंथियों ने भाग लिया। इस बैठक में सिक्ख कौम को सही दिशा में ले जाने और एक संगठन बनाने का निर्णय लिया गया। इसके उपरांत सन् १ अक्तूबर, १८७३ ई. को मंजी साहिब में बैठक हुई और यह संगठन अस्तित्व में आया। उसका नाम सिंघ सभा रखा गया। यहीं से 'सिंघ सभा लहर' का आरंभ हुआ।

यह एक ऐतिहासिक घटना थी, जिसने आने वाले समय में सिक्खों के अंदर व्यापक सामाजिक, धार्मिक चेतना जाग्रत करने और सिक्ख धर्म के मूल स्वरूप से जोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस संगठन से बाबा खेम सिंघ बेदी, कंवर बिकरम सिंघ कपूरथला और ज्ञानी गिआन सिंघ जैसे सिक्ख भी जुड़े। ज्ञानी गिआन सिंघ इस संगठन के पहले सचिव चुने गये। सिंघ सभा का मुख्य उद्देश्य सिक्ख धर्म के मूल स्वरूप को पुनः स्थापित करना, ऐतिहासिक और धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन, समाचार पत्र और पत्रिका का प्रकाशन आरंभ करना, सिक्खों को शिक्षा के लिये प्रेरित करना, स्कूल-कॉलेज खोलना, सिक्ख रहित मर्यादा का पालन सुनिश्चित कराना, गुरुद्वारों का सुव्यवस्थित प्रबंध और सिक्खों के राजनीतिक हितों की सुरक्षा आदि था। इस संगठन का कार्य-क्षेत्र शहरों तक ही सीमित था। २ नवंबर, सन् १८७९ को लाहौर में प्रोफेसर गुरमुख सिंघ ने प्रमुख सिक्खों की एक बैठक बुलाई, जिसमें एक नया संगठन, 'लाहौर सिंघ सभा' का गठन किया गया। इसके अध्यक्ष दीवान बूटा सिंघ और सचिव प्रोफेसर गुरमुख सिंघ चुने गये। ज्ञानी दित्त सिंघ, भाई जवाहर सिंघ आदि भी इससे जुड़े। लाहौर सिंघ सभा ने ग्रामीण क्षेत्रों की ओर अधिक ध्यान देने की रणनीति अपनायी। ज्ञानी दित्त सिंघ ने अपना पूरा जीवन धार्मिक कार्यों हेतु समर्पित कर दिया। उन्होंने सिक्ख धर्म के सिद्धांतों और इतिहास का शुद्ध स्वरूप मुखर करने हेतु दो दर्जन से अधिक पुस्तकों की रचना की। इस कालावधि में भाई कान्ह सिंघ नाभा और भाई वीर सिंघ ने भी अपना अनमोल साहित्यिक योगदान दिया था। सिंघ सभा ने अपना सुधार और चेतना अभियान व्यापक स्तर पर आरंभ किया। इसके लिये गांव-गांव में स्कूल खोले गये। सिक्खों में अपनी स्वतंत्र पहचान के प्रति चेतना उत्पन्न करने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया। सिक्ख समाज को जाति-वर्ण का भेदभाव बुरी तरह से तोड़ रहा था। इसके विरुद्ध जागरूक किया जाने लगा। धार्मिक ढोंग, आडंबरों के प्रति सचेत किया जाने लगा। गुरु साहिबान की मौलिक शिक्षाओं को उभार कर ही यह संभव था। इसके लिये साहित्य प्रकाशित किया गया और लाहौर से सन् १८९४ में 'खालसा अखबार' का प्रकाशन भी आरंभ किया गया, जिसके संपादक ज्ञानी दित्त सिंघ बने। इस अखबार ने ज्ञानी दित्त सिंघ की प्रखर लेखन-शैली के कारण शीघ्र ही लोकप्रियता अर्जित कर ली। लोगों तक इस अखबार के माध्यम से अपनी बात पहुंचाने में सिंघ सभा आंदोलन को सफलता मिलने लगी।

सन् १८८२ को सिंघ सभा मूवमेंट का स्वर्णिम वर्ष माना जाता है, जब सिंघ सभा ने अपनी गतिविधियों का प्रसार रावलपिंडी, पेशावर, बन्नू, कोहाट, ऐबटाबाद, जलंधर, गुजरांवाला, लायलपुर, पटियाला, शिमला, झेलम, लुधियाना, अंबाला, क्वेटा, मुलतान, जींद और फ़रीदकोट तक कर लेने में सफलता प्राप्त कर ली। अब सिंघ सभा मूवमेंट एक व्यापक रूप ले चुकी थी। सिंघ सभा अब लहर बन चुकी थी। प्रोफेसर गुरमुख सिंघ आदि ने इस लहर को अधिक प्रभावी बनाने के लिये 'सिंघ सभा

अमृतसर' से समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। बैठकें हुईं, किन्तु कोई निष्कर्ष नहीं निकला। सन् १८८३ में 'खालसा दीवान' बन गया, जिसके अध्यक्ष बाबा खेम सिंघ (बेदी) और सचिव प्रोफेसर गुरमुख सिंघ बने। खालसा दीवान ने विभिन्न सिंघ सभाओं की गतिविधियों में समन्वय स्थापित करना आरंभ कर दिया, किन्तु यह संगठन आरंभ से ही आंतरिक मतभेदों का शिकार हो गया। नतीजा यह निकला कि सन् १८८६ में लाहौर में अलग खालसा दीवान बना लिया गया। १९०२ ई. में सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया की अध्यक्षता में 'चीफ खालसा दीवान' बना।

डॉ. गुरदरशन सिंघ (ढिल्लों) ने लिखा है कि सन् १८७३ से सन् १९२० तक चलने वाला सिंघ सभा अभियान आधुनिक पंजाब में सिक्खों का सबसे महान सामाजिक - धार्मिक अभियान है। यह सबल अभियान उस समय आरंभ हुआ जब सिक्ख धर्म घोर संकट में था। सिंघ सभा अभियान ने सिक्खों को आधुनिक दृष्टि प्रदान की, ताकि वे सिक्ख धर्म के पावन सिद्धांतों को पहचान सकें और उन पर दृढ़ रह कर जीवन के हर क्षेत्र में प्रगति कर सकें।

सन् १८९२ में श्री अमृतसर साहिब में 'खालसा कॉलेज' की स्थापना सिंघ सभा की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में एक थी, जिसने पंजाब के शैक्षिक परिदृश्य को तो बदला ही, राजनैतिक चेतना जाग्रत करने में भी उल्लेखनीय भूमिका निभाई। सन् १९०९ में 'अनंद मैरिज एक्ट' का पारित होना भी अन्य विशिष्ट और दूरगामी प्रभाव वाली सफलता थी।

सिंघ सभा का नेतृत्व जानता था कि धर्म के प्रचार-प्रसार में सत्ता का सहयोग महत्वपूर्ण होता है। कदाचित यही कारण था कि अंग्रेज़ शासन अधिकारियों के साथ टकराव से बचते रहे। पंजाब के गवर्नर सर राबर्ट ईजर्टन को सिंघ सभा का संरक्षक बनाया गया। प्रोफेसर गुरमुख सिंघ ने अंग्रेज़ अधिकारी मैक्स आर्थर मैकालिफ़ को श्री गुरु ग्रंथ साहिब का इंगलिश में अनुवाद करने के लिये सहमत कर लिया था। इस अनुवाद में पंद्रह वर्ष लगे, जिसे बाद में आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ने प्रकाशित किया था।

'अमृतसर सिंघ सभा' का नेतृत्व जहां कुलीन माने जाने वाले सिक्खों के हाथ में था वहीं 'लाहौर सिंघ सभा' को जमीन से जुड़े सिक्ख नेतृत्व दे रहे थे, किन्तु दोनों के मूल उद्देश्य समान थे। विभिन्न स्थानों पर गठित हुई सिंघ सभाओं ने इन दो मुख्य संगठनों से ही प्रेरणा ली। इन सिंघ सभाओं ने अपने भवन एवं गुरुद्वारे बनाये और सिक्ख ग्रंथी, रागी, प्रचारक नियुक्त किए, जिससे महंतों, पुजारियों के प्रभुत्व पर जोरदार कुठाराघात हुआ और गुरु-स्थानों की मर्यादा स्थापित करने में मदद मिली। यह बड़ा परिवर्तन था।

सिक्खों मे व्यापक चेतना जाग्रत हो चुकी थी। एक बड़ा वर्ग ऐतिहासिक गुरुद्वारों पर महंतों, पुजारियों के नियंत्रण और गुरु-घर की मर्यादा के उल्लंघन को लेकर चिंतित एवं व्यग्र था। इन गुरुद्वारों को महंतों से मुक्त कराने की भावना तेजी से उभर रही थी। क्योंकि इन महंतों, पुजारियों को अंग्रेज़ अधिकारियों का प्रश्रय मिला हुआ था। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और शिरोमणि अकाली दल का गठन उस व्यापक सिक्ख चेतना का ही परिणाम थे जो सिंघ सभा लहर ने पैदा की थी और सिक्खों को -अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने को प्रेरित किया था। इस अतुलनीय योगदान के कारण सिंघ सभा लहर ने सिक्ख इतिहास में अपना खास स्थान बनाया है।

महान सिक्ख जरनैल : नवाब कपूर सिंघ

-डॉ. मनजीत कौर*

सिक्ख इतिहास की प्रमुख शख्सियतों में से एक नाम बड़े अदब-सत्कार सहित लिया जाता है—— नवाब कपूर सिंघ का, जिनका सम्पूर्ण जीवन सिक्ख पंथ की सेवा में समर्पित हुआ। *''मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु।।''* के पूर्ण धारक नवाब कपूर सिंघ का जन्म सरदार साधू सिंघ के गृह में गांव फैज़लपुर में १६९७ ई. में हुआ। आपके पिता जी गुरु-घर के अनन्य सेवक थे। गुरमति वातावरण में परवरिश होने के फलस्वरूप किशोरावस्था में ही आप भाई मनी सिंघ जी के जत्थे से अमृत-पान कर सिंघ सज गए। माता जी से बाणी का पाठ करना सीख लिया। बचपन से ही सेवा-कार्यों में समर्पित था आपका जीवन। सेवा-भावना आपको विरासत में मिली थी। आप जत्थेदार दरबारा सिंघ के जत्थे में शामिल हो गए।

नवाब कपूर सिंघ सन् १७३३ से १७५३ ई. तक लगभग २० वर्ष तक पंथ की अगुआई करते रहे। डॉ. कुलदीप सिंघ हउरा के अनुसार, बाबा बंदा सिंघ बहादुर के समय नवाब कपूर सिंघ सेवा-कार्य तो करते थे परंतु अभी ज्यादा उभर कर सामने नहीं आए थे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा अन्य अनेक सिंघों को शहीद करके मुगल सरकार यह समझ बैठी थी कि सिक्ख लहर हमेशा के लिए खत्म कर दी गई है, किंतु बात असल में यह नहीं थी, क्योंकि बाबा बंदा सिंघ बहादुर के बाद सिक्खों ने अपने आंदोलन को जिस सरगर्मी के साथ चलाया, वह इतिहास का एक शानदार एवं लासानी हिस्सा है। यह संग्राम करते हुए सिंघों ने घर से बेघर होकर, भूख-प्यास आदि मुश्किलें ही नहीं झेलीं, बल्कि शहीदी भी दी। उन्होंने खोपरी उतरवाई, चरखड़ियों पर चढ़े, बंद-बंद कटवाए, परंतु अपनी सिक्खी आस्था को सदास्थिर रखा।

सिक्ख इतिहास में ऐसे शूरवीर योद्धा हुए हैं जो एक ही समय में बहुमुखी गुणों के धारक हुए हैं। उनकी विलक्षणता है—— दृढ़ता, भक्ति-शक्ति, समर्पण, दूरदृष्टि, देश-धर्म हेतु न्यौछावर होने का जज्बा तथा शीश हथेली पर रख कर लड़ना आदि-आदि। ये गुण सिक्ख कौम में कहां से आए? अकाल पुरख वाहिगुरु के दर से, क्योंकि खालसा परमात्मा की मौज से ही अस्तित्व में आया है। दुनिया में इसकी विलक्षण पहचान कायम हुई है, क्योंकि इस कौम को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी सूरत और सीरत प्रदान की है :

खालसा मेरो रूप है खास।
खालसे महि हउं करों निवास।।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से प्राप्त सूरत और सीरत वाले, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, विनम्रता

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

के पुंज एवं शूरवीर योद्धा नवाब कपूर सिंघ ऐसे जरनैल हुए हैं, जिनसे अफगानिस्तान का बादशाह नादिर शाह दुर्रानी भी थर-थर कांपता था। यह वही नादिर शाह था, जिसने सन् १७३८ में १२ हजार शूरवीरों के साथ हिंदोस्तान की मुगल हुकूमत की डेढ़ लाख फौज को हराया था।

सिक्खों पर अत्याचार तो होते ही रहे हैं, लेकिन १७२६ ई. में जब लाहौर का सूबेदार जकरिया खान बना तो अत्याचारों की आंधी ने प्रचण्ड रूप धारण कर लिया। इस आंधी का रुख मोड़ने के लिए कौमी हालात पर विचार-विमर्श हेतु खालसे की ऐतिहासिक एकत्रता श्री अमृतसर साहिब में हुई। इतिहासकारों के तथ्यों के अनुसार वहां खालसे ने निर्णय लिया कि हुकूमत के विरुद्ध टक्कर लेते हुए शासकों के खुशामदी लोगों की अच्छी तरह खबर ली जाए। इस दौरान जत्थेदार दरबारा सिंघ द्वारा नवाब कपूर सिंघ की काबलियत को देखते हुए उन्हें मुख्य सेवादार के रूप में सेवा सौंपी गई, जिसे उन्होंने आजीवन बाखूबी निभाया।

'गुरमति गिआन मिशनरी कॉलेज लुधियाना' द्वारा प्रकाशित 'गुरमति एलीमेंटरी कोर्स अध्याय-५' में नवाब कपूर सिंघ द्वारा जत्थेदार के रूप में की गई सेवाओं का जिक्र करते हुए लिखा है कि जत्थेदार के रूप में एक बहादुर नौजवानों का जत्था माझा क्षेत्र की ओर निकला, जिसका प्रमुख कार्य दुश्मनों की खबरें हेंडक्काटर तक पहुंचाना था। निश्चित किए गए कार्यक्रम के अनुसार ४०० सिंघों ने मिलकर लगभग चार लाख रुपए का पहला शाही खजाना, जो मुलतान से लाहौर जा रहा था, खुडिआ, जिला लाहौर के मुकाम से लूटा। दुश्मनों के घोड़े तथा शस्त्र छीन लिए और उनका काफी जानी नुकसान किया। दूसरी बार में खालसे ने एक लाख रुपए का खजाना, जो कसूर से लाहौर ले जाया जा रहा था, वह लूटा। तीसरी सफलता खालसे को यह हुई कि अपने वैरी मुरतज़ा खान उचकज़ई (जो काबुल, ईरान के घोड़े शाही सेना हेतु सप्लाई करता था तथा शस्त्र भी भेजता था) की अक्ल ठिकाने लाई गई। यह सन् १७२६ में कई सौ घोड़े तथा हथियारों का जखीरा काबुल से दिल्ली ले जा रहा था। जब यह जंडिआला के पास पहुंचा तो नवाब कपूर सिंघ के जत्थे ने आकर खबर दी। खालसे ने एकदम हमला कर दिया तथा घोड़े और हथियार छीन लिए। इस प्रकार खालसे के पास घोड़े तथा हथियारों की भरमार हो गई।

इसके अतिरिक्त भी कई बार नवाब कपूर सिंघ द्वारा मिली सूचनाओं से कई शाही खजाने लूटे गए, लेकिन इस सबके पीछे सिक्खों का इरादा यही था कि मुगल हुकूमत को सबक सिखाया जाए और उसे शक्तिहीन करके खत्म किया जा सके।

खालसे के हमलों से दुखी होकर लाहौर के सूबेदार जकरिया खान ने सिक्खों पर सख्ती और बढ़ा दी। परिणामस्वरूप खालसा और भी मजबूर जत्थेबंदी बनता गया। एक समय ऐसा भी आया कि खालसे ने हुकूमत के खजाने में पैसा जाने के समस्त मार्ग बंद कर दिए। अंत में हर तरफ से हताश-परेशान जालिम जकरिया खान ने दिल्ली के बादशाह तक खबर पहुंचाई कि किसी भी तरह

की सख्ती खालसे को खत्म करने में काम नहीं आ सकी। तदुपरांत दुष्ट हुकूमत ने एक टेढ़ी चाल चली कि खालसा से समस्त बन्दिशें हटा कर, उन्हें उच्च पद देकर, उनमें आपस में विरोध पैदा करके उनका झगड़ा करवा देना चाहिए। इस इरादे से भाई सुबेग सिंघ, जो कि उस समय लाहौर में सरकारी ठेकेदार थे और उनका सरकारी दरबार में अच्छा खासा रसूख था, के माध्यम से १७३३ ई. में नवाबी का खिताब तथा जागीर का पटा सिंघों को प्रेषित किया गया। जब भाई सुबेग सिंघ यह सब लेकर श्री अमृतसर साहिब आए तो सिंघों की अगुआई करने वाले दीवान दरबारा सिंघ ने शाही सौगातें लेने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। इस संदर्भ में 'प्राचीन पंथ प्रकाश' के रचयिता भाई रतन सिंघ (भंगू) लिखते हैं :

हम को सतिगुर बचन पतिशाही।
हम को जापत डिग सोऊ आही।।३६।।. . .
पतिशाही छड किम लहैं निबाबी।
पराधीन जिह मांहि खराबी।।३८।।

(पृष्ठ २८५)

अर्थात् खालसे को सतिगुरु (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) ने पातशाही प्रदान की है। वो पातशाही छोड़कर नवाबी क्यों ले, जिसके फलस्वरूप बादशाह के अधीन रहना पड़े?

भाई सुबेग सिंघ ने अनुनय-विनय की कि खालसे को यह जागीर लौटानी नहीं चाहिए, तब भी सिक्ख इसे लेने को हरगिज तैयार नहीं थे। जब भाई सुबेग सिंघ ने यह गुजारिश खालसे से की कि अगर किसी व्यक्ति के लिए नहीं तो गुरु के लंगर हेतु ही प्रवान कर लो। इस पर विचार हुआ और अंत में यह तय हुआ कि नवाबी किसी अनन्य सेवादार को दे देनी चाहिए। स. कपूर सिंघ, जो कि आठों पहर सेवा में तत्पर रहते थे, उस समय भी वो संगत में पंखे की सेवा कर रहे थे, तब यही फैसला हुआ कि नवाबी स. कपूर सिंघ को दे दी जाए। स. कपूर सिंघ नवाबी लेना नहीं चाहते थे, लेकिन जत्थेदार साहिबान के आग्रह को पंथ का आदेश मानकर उन्होंने नवाबी स्वीकार तो कर ली लेकिन साथ ही शर्त रखी कि संगत की सेवा तथा घोड़ों की लीद उठाने की सेवा उनसे वापिस न ली जाए तथा नवाबी की पोशाक को पांच प्यारों के चरण स्पर्श करवा कर ही उन्हें पहनाया जाए। यह थी नवाब कपूर सिंघ की विनम्रता और उच्च आदर्श। ऐसे महान व्यक्तित्व के स्वामी नवाब कपूर सिंघ वर्तमान में सिक्ख कौम के लिए प्रेरणा-स्रोत हैं।

इतिहासकारों के अनुसार उस जागीर की आमदनी एक लाख रुपए वार्षिक थी। यह सारी राशि लंगर में खर्च कर दी जाती थी। रेशमी दसतार, हीरों जड़ित कलगी, सुनहरी कड़े, एक हार, एक मोतियों की माला तथा एक कृपाण स. कपूर सिंघ को सौंप दी गई।

डॉ. कुलदीप सिंघ हउरा के विचारानुसार, सरकार का मानना था कि इस लालच में आकर सिक्ख हमारे अधीन रहेंगे, किन्तु सरकार को यह भी मालूम था कि दुनियावी लोभ, लालच तथा हुकूमत का भय इस कौम को अपने निशाने से नहीं डिगा सकता। सिंघों ने इस शांति के समय का लाभ उठाते हुए अपनी जत्थेबंदी को मजबूत

करना शुरू कर दिया। उन्होंने अपना ध्यान धर्म-प्रचार की ओर भी लगाया। सरकार की कुटिल नीति के कारण भाई मनी सिंघ जी को बंद-बंद कटवाकर शहादत देनी पड़ी। सरकार ने श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब के गिर्द फौजी चौकियां बिठा दीं। इलाके के चौधरियों को ताड़ना की गई कि जिसके इलाके में सिक्ख जिंदा मिल गए और उसने इस बात की सूचना हाकिम तक न भेजी तो उस चौधरी का बुरा हाल किया जाएगा।

समय की नजाकत को समझते हुए खालसा को दो भागों—— बुड्ढा दल तथा तरुणा दल में विभक्त किया गया। ४० वर्ष से ज्यादा आयु वाले बुड्ढा दल में तथा इससे कम आयु वाले नौजवान तरुणा दल में। बुड्ढा दल का प्रमुख नवाब कपूर सिंघ को नियुक्त किया गया। इनके साथ स. बाघ सिंघ हलोवालिया तथा स. हरी सिंघ थे। तरुणा दल के पांच जत्थे बनाए गए। उनके जत्थेदार बाबा दीप सिंघ जी, भाई करम सिंघ जी, भाई कान्ह सिंघ जी नियुक्त किए गया।

'गुरमति एलीमेंटरी कोर्स अध्याय-५' के पृष्ठ १६ पर दिए गए विवरण के अनुसार दोनों दलों के नियम इस प्रकार निर्धारित किए गए :—

१. जो भी माया (राशि) जहां से भी प्राप्त हो, उसे खालसे के संयुक्त खजाने में जमा करवाया जाए।

२. दोनों जत्थों के गुरसिक्खों की हथियारों, घोड़ों एवं शस्त्रों की जरूरत इस खजाने से पूरी की जाए।

३. दोनों जत्थों का लंगर एक ही स्थान पर तैयार हो।

४. अपने जत्थेदार का आदेश मानना प्रत्येक सिंघ का मुख्य कर्त्तव्य होगा।

५. जो भी सिंघ घर जाए अथवा सगे-सम्बन्धियों से मिलने जाए, वह जत्थेदार की आज्ञा लेकर जाए एवं वापिस आकर उपस्थिति दर्ज करवाए।

इस प्रकार इन दोनों जत्थों के सुख-दुख साझे थे और एक संयुक्त परिवार की तरह इनका जीवन था। सन् १७३५ ई. में जत्थेदार दरबारा सिंघ परलोक गमन कर गए। परिणामस्वरूप सिक्खों के नेतृत्व की सम्पूर्ण जिम्मेदारी नवाब कपूर सिंघ के कंधों पर आ गई। समय की हर विकट परिस्थिति में खालसा पंथ को आपका कुशल नेतृत्व मिला, चाहे वो समय दुष्ट नादिर शाह के आक्रमणों का हो, जकरिया खान, मीर मन्नू तथा अहमद शाह अब्दाली के हमलों का हो। सरकार के मंसूबों पर पूरी तरह से पानी फिर गया था। अन्ततः अपनी योजनाओं में असफल होकर हुकूमत ने १७३५ ई. में जागीर जब्त कर ली। स. कपूर सिंघ हमेशा के लिए नवाब कपूर सिंघ के रूप में सिक्ख इतिहास में दर्ज रहे।

जब तरुणा दल की गिनती १२ हज़ार से अधिक हो गई तो नवाब कपूर सिंघ ने इन जत्थों की १२ मिसलें बना दीं। इसके साथ ही नवाब कपूर सिंघ को इस दौरान माता सुंदर कौर जी (माता सुंदरी जी) का आदेश पहुंचा कि सरदार जस्सा सिंघ (आहलूवालिया) को हमारा बच्चा जान कर सिंघों वाले सर्वगुणों से सम्पन्न कर देना। यह आदेश पाकर नवाब कपूर सिंघ ने सरदार जस्सा सिंघ को बहुत थोड़े-से समय में ही हर

पक्ष से तैयार कर दिया तथा तोशेखाने (भंडारे) की चाबियां सौंप दीं। सन् १७३३-३४ में खालसे को जो समय मिला उसमें वो बुड्ढा दल के नेतृत्व में एक शक्तिशाली जत्थेबंदी के रूप में एकजुट हुआ। यही नहीं, नवाब कपूर सिंघ के प्रचार का इतना प्रभाव पड़ा कि हजारों की गिनती में नए प्राणी अमृत-पान कर खालसा पंथ में शामिल हो गए। खालसे की एकता,भातृभावना एवं धर्म प्रचार को देख कर जकरिया खान की छाती पर मानों सांप लोटने लगे। उसने सिंघों के सिरों का मूल्य लगा दिया। सिंघ जंगलों की ओर चले गए। इस दौरान नवाब कपूर सिंघ ८०० सिंघों सहित बाबा आला सिंघ (संस्थापक रियासत पटियाला) के पास गए। बाबा आला सिंघ ने गुरसिक्खों की खूब सेवा की, लेकिन हुकूमत के जुल्म सिक्खों पर निरन्तर जारी रहे। ज्यों-ज्यों जुल्म बढ़ते गए यह कौम और भी निखर कर, सुसंगठित होकर दुश्मनों का मुकाबला करती तथा हर विकट परिस्थिति में विजयी होती चली गई। भयानक अत्याचारों का सिलसिला हुकूमत की ओर से जारी रहा, ताकि लोग डर कर सिक्ख बनने की हिमाकत न करें। फिर भी सिक्खों की गिनती बढ़ती ही गई। नवाब कपूर सिंघ की अगुआई में खालसा भयावह जुल्म भी खुशी-खुशी सहन करते हुए अकाल पुरख का शुक्राना करता रहा। यह सब नवाब कपूर सिंघ के उच्च आचरण और कुशल नेतृत्व से ही मुमकिन हो पाया। इन्हीं दिनों खालसे का तेज प्रताप दर्शाने हेतु तथा जालिम हुकूमत को जलील करने के उद्देश्य से नवाब कपूर सिंघ ने २० शूरवीरों को साथ बेखौफ, निर्भयतापूर्वक लाहौर में प्रवेश किया और जो भी उनके मार्ग में रुकावट बना, उसे मौत के घाट उतारते हुए सीधे कोतवाली पहुंचे। घोड़े से छलांग लगाई और अस्त्रागार जा पहुंचे। वहां हथियार कब्जे में करके पहरे पर सिंघ खड़े कर दिए और स्वयं कोतवाल की गद्दी पर जा विराजमान हुए। यहीं नहीं, वहां जो वास्तव में कोतवाल था, उसे आदेश दिया कि जितने भी कैदी हैं, उन्हें रिहा किया जाए तथा सारा खजाना सिंघों के समक्ष हाजिर किया जाए। कोतवाल ने तुरंत आदेश का पालन किया। जाते हुए नवाब कपूर सिंघ ने कोतवाल से कहा कि अपने हाकिमों से कह देना कि सबसे बड़े बादशाह (पातशाह) का कोतवाल (नवाब कपूर सिंघ) आया था। उसके हुक्म से सबकी रिहाई की गई है। यह सब कुछ इतनी स्फूर्ति से किया गया कि जब तक कर्मचारियों को कानो-कान खबर पहुंची तब तक नवाब कपूर सिंघ वहां से आलोप हो गए।

यही नहीं, जालिम नादिर शाह ने १७३९ ई. में हिन्दोस्तान पर हमला किया। नादिर शाह मारकाट करता हुआ दिल्ली जा पहुंचा। सर जादूनाथ सरकार ने लिखा है कि नादिर शाह लगभग ३० हजार आदमियों का कत्लेआम कर १५ करोड़ नगद, ५० करोड़ का माल-सामान, तख्त ताऊस आदि दिल्ली से लूटकर, बहुत सारे हिंदू लड़के-लड़कियों को गुलाम बनाकर अपने देश लौट रहा था। माना जाता है कि लगभग २० हजार हाथी, घोड़े, ऊंट, खच्चरों आदि पर लूट का माल तथा कैदियों को जकड़कर बैलगाड़ियों

पर लादा हुआ था। जब नवाब कपूर सिंघ और इनके साथ स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया स. बघेल सिंघ आदि को यह सूचना मिली, उनके गौरव ने उन्हें ललकारा। उन्होंने कई तरफ से हमला कर नादिर शाह की लूटमार का भार हल्का कर दिया तथा साथ ही कैदी लड़के-लड़कियों को सुरक्षित उनके घर पहुंचाया। नादिर शाह चकित रह गया। उसने जकरिया खान से पूछा, ''ये कौन हैं, जिन्होंने मुझे ललकारा है?''

जकरिया खान का जवाब था— ''ये लोग खालसा हैं। ये जंगलों में रहते हैं, घोड़ों की काठियों पर सोते हैं, चनों को बादाम कह कर खाते हैं, आचरण के पक्के हैं। हम इन पर जुल्मों की इन्तहा कर हार गए हैं, मार-मार कर थक चुके हैं, लेकिन इन्हें खत्म नहीं कर पाए।'' नादिर शाह यह सुनकर विस्मित हुआ और कहने लगा, ''वह समय दूर नहीं, जब ये लोग देश के हाकिम होंगे अर्थात् राज करेंगे।'' सचमुच खालसे ने राज किया।

इसी प्रकार श्री हरिमंदर साहिब का अपमान करने वालों का भी खालसा ने समूल नाश किया। छोटा घल्लूघारा, जो १७४६ ई. में घटित हुआ, बेशक जालिम सरकार का मुकाबला करते हुए लगभग ८ हजार सिंघ-सिंघणियां शहीद हो गए, फिर भी इस कौम के हौसले बुलंद रहे। १७४८ ई. में 'सरबत्त खालसा' श्री अमृतसर साहिब में श्री अकाल तख्त साहिब पर एकत्र हुआ। नवाब कपूर सिंघ की जत्थेदारी में हुए विचार-विमर्श एवं प्रेरणा के उपरान्त समूची फौजी जत्थेबंदी का नाम 'दल खालसा' रखा गया तथा उसका सेनापति स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को नियुक्त किया गया। जिस प्रकार पंथ की सेवा से नवाब कपूर सिंघ को नवाबी मिली उसी प्रकार पंथ की सेवा तथा नवाब कपूर सिंघ के आशीर्वाद से स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को 'सुलतान-उल-कौम' की पदवी मिली।

अप्रैल, १७४८ ई. में मीर मन्नू पंजाब का सूबेदार घोषित हुआ। इसके साथ ही जबरदस्त जुल्म का सिलसिला सिक्खों के लिए नए सिरे से फिर शुरू हो गया। सिक्खों को समूल खत्म करने के दुष्ट इरादे से मीर मन्नू ने गुप्त रूप से नौ सो छोटी तोपें बनवाईं। इसकी सख्ती और जुल्मों की इन्तहा पर आम कहावत प्रचलित हो गई थी :

मन्नू असाडी दातरी, असीं मन्नू दे सोए।
जिउं जिउं मन्नू वड्डदा, असीं दूण सवाए होए।

इतिहासकारों के अनुसार १७५३ ई. में मीर मन्नू की मृत्यु हुई। सिंघ लाहौर पर टूट पड़े। वहां से बंदी सिंघ-सिंघणियों एवं बच्चों को रिहा करवाया, जहां सिंघणियों से सवा-सवा मन पीसन पिसवाए जाते थे, उनके बच्चों के टुकड़े-टुकड़े कर माताओं के गले में हार बनाकर डाल दिए जाते थे। इतने जुल्म सहकर भी अकाल पुरख की रजा को मीठा करके शिरोधार्य करते हुए सिंघणियां नहीं घबराईं। आज रोज़ाना की अरदास में उन महान सिंघणियों को बड़े अदब-सत्कार के साथ स्मरण किया जाता है।

और भी अनेक घटनाएं जिक्रयोग्य हैं, मगर विषय-विस्तार की वजह से उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। ७ अक्तूबर, १७५३ ई. को श्री अमृतसर साहिब में सिक्खों की एक बड़ी सभा

हुई। नवाब कपूर सिंघ ने खालसे को मुखातिब होकर कहा कि "अब मेरा अन्तिम समय निकट है। मैंने जब भी आपसे किसी तरह के दान की मांग की, आप सदैव निवाजते रहे। अब मैं आपसे अंतिम दान मांगता हूं और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप मुझे यह भी दान प्रदान कर निवाजोगे। वो मांग यह है कि आप सदैव एकजुट होकर अर्थात् मिलजुल कर रहना। आज से आपको स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया जैसी महान गुरसिक्ख हस्ती को सौंपता हूं।"

इसके उपरान्त आपने श्री कलगीधर जी की श्रीसाहिब, जो आपको माता सुंदर कौर जी से प्राप्त हुई थी, स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को प्रदान की। इसके साथ ही पंथ की जत्थेदारी उन्हें सौंप कर आप वाहिगुरु के चरणों में जा विराजे। आप जी का अंतिम संस्कार गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी के निकट किया गया। आप जैसी महान शख्सियतों हेतु पावन बाणी का फरमान है :

आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से।।
तिन धंनु जणेदी माउ आए सफलु से।।

(पन्ना ४८८)

शत्-शत् नमन् ऐसी महान विभूतियों को, जिनका श्वास-श्वास समर्पित था देश-कौम हेतु। उनकी महान करनी और विनम्रता रहती दुनिया तक प्रेरणा-स्रोत बन कौम में अद्भुत शक्ति का संचार करती रहेगी।

कविता

हर हाल में खुश रहना सीख लो!

या तो ढंग से कहना सीख लो!
या फिर तुम चुप रहना सीख लो!
बेशक हों जैसी भी परिस्थितियां,
हर हाल में खुश रहना सीख लो!

एक ईश्वर पर विश्वास सदा रखना!
दंभी, पाखंडी से कोई उम्मीद मत रखना!
दुनिया भी बन जाती है दोधारी तलवार।
करती है यह तो हर तरफ से वार।

बस, नेक नियति से करो हर काम!
तभी रहेगा सदा सुकून और आराम!
जीने का रखो सदा विशुद्ध अंदाज!
ज़मीर की तुम सदा सुनो आवाज!

खुशियों की चाबी सदा रखो अपने पास!
विपत्ति में खूब देती है यह साथ!
इस चाबी को कभी मत गँवाना!
नहीं तो पड़ेगा जीवन भर पछताना!

जीवन-लक्ष्य हमेशा तुम याद रखना!
छोटी-मोटी बातों में मत उलझना!
खुशनुमा रखना सदा माहौल!
यह जिंदगानी है बड़ी अनमोल!

खालसयी परंपरा का प्रतीक : सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया

*-डॉ. गुरनाम कौर**

महान सिक्ख योद्धा और खालसयी परंपराओं पर दृढ़ता के साथ पहरा देने वाले सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया (१७१८- १७८३ ई.) की तीन सौ-वर्षीय जन्म-शताब्दी सन् २०१८ में धूमधाम से मनाई गई है। फलसफे की छात्रा होने के नाते मेरी पहली रुचि उस दार्शनिक पृष्ठभूमि का अवलोकन करना है, जिसमें सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया पैदा हुए, पले, बढ़े और प्रवान चढ़े। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया उस शख्सियत का नाम है जिन्होंने खालसयी परंपराओं की न केवल पालना की, बल्कि खालसयी परंपराओं पर दृढ़ता के साथ पहरा देते हुए अपने मिशन की पूर्ति के लिए संघर्ष भी करते रहे। जिस पृष्ठभूमि की यहाँ बात की जानी है उसकी आधारशिला सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक साहिब के इस संसार पर आगमन के साथ ही रखी गई थी। श्री गुरु नानक साहिब ने जिस इंकलाबी फलसफे पर एक बिलकुल ही अलग धर्म की नींव रखी, वह केवल एक नया धर्म ही नहीं था, बल्कि उस फलसफे के गहरे सामाजिक और राजनैतिक सरोकार थे, जिनका मकसद एक स्वस्थ, आत्मनिर्भर मानव समानता, भाईचारक एकता, निष्पक्ष और जुल्म-जब्र, लूट-खसूट से रहित मानव एवं समाज की सृजन करना था, जिसमें प्रत्येक मानव चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, किसी भी धर्म या जाति या श्रेणी से सम्बन्धित हो, बिना किसी भय के आत्म-सम्मान वाला स्वतंत्र जीवन बसर कर सके। इस फलसफे का आग़ाज़ १४९९ ई. में श्री गुरु नानक साहिब के 'वेईं नदी प्रवेश' के साथ होता है, जब उन्होंने वेईं-स्नान के बाद पहला एलान किया था— ''न को हिंदू, न को मुसलमान।''

जिस समय श्री गुरु नानक साहिब का प्रकाश इस धरती पर हुआ, उस समय भारतीय समाज धार्मिक कर्म-कांड, जात-पांत, ऊंच-नीच, वर्ग-विभाजन जैसी लहू चूसने वाली धार्मिक और सामाजिक रस्मों की जंजीरों के साथ जकड़ा हुआ, अनेक प्रकार से बँटा हुआ आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक ग़ुलामी में जी रहा था। इसका ज़िक्र हमें श्री गुरु नानक साहिब की बाणी में स्पष्ट रूप से मिल जाता है। भाई गुरदास जी ने इसका वर्णन अपनी पहली वार की १७वीं पउड़ी में करते हुए, इसको 'जुगि गरदी' का नाम दिया है, जिसमें संसार का सारा कार-व्यवहार उल्टा हो जाता है, संसार पाप के पसरने के कारण भ्रष्ट

**२२, अर्बन अस्टेट, फेस— १, पटियाला— १४७००२, फोन : ९०५८६-६६०९१*

हो जाता है। श्री गुरु नानक साहिब ने जिस आदर्श समाज की सृजना करने का शुभारंभ सिक्ख धर्म की नींव रख कर किया, वह मानवतावादी जीवन-मूल्यों पर आधारित हिंदू और मुसलमान दोनों से अलग और निराला था। श्री गुरु नानक साहिब ने आध्यात्मिकता को एकांत से तोड़ कर सामाजिकता के साथ जोड़ा, ताकि एक बेहतर संसार की सृजना की जा सके, जहाँ मानव मानवतावादी सरोकार की रक्षा करते हुए *''ऐसी जुगति जोग कउ पाले।। आपि तरै सगले कुल तारे।।''*१ का अनुभव कर सके। इस आदर्श की पूर्ति के लिए श्री गुरु नानक साहिब ने मानव को धार्मिक कर्म-कांड में से निकाल कर ''एक ओअंकार'' (एकेश्वर) के साथ जोड़ा, जो इस संसार का करता पुरख होने के साथ-साथ इसके जर्रे-जर्रे में व्यापक है और मानव भी उसी रोशनी से प्रकाशित है— *''सभ महि जोति जोति है सोइ।। तिस दै चानणि सभि महि चानणु होइ।।''* उस परम-सत्य की वंदना का मार्ग किसी प्रकार की पूजा-विधियों की अपेक्षा उसके गुण गायन करने को बताया, ताकि मानव उसके गुणों को अपने अंदर बसा कर उस ज्योति को प्रज्वलित कर अपने व्यवहार में प्रकट कर सके। यही मानव-समानता की आधारशिला थी, जिसके अंतर्गत श्री गुरु नानक साहिब ने *''नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु।।''* होने का एलान किया और मानव की विशुद्ध रचना और उसके रचनाकार होने को प्रमाणिकता प्रदान करते हुए किसी मलिक भागो के शाही भोज को कबूल करने की जगह भाई लालो जी विशुद्ध श्रम की रूखी-सूखी रोटी 'सतिनामु' कह कर सप्रेम छकी। यह एक ऐसा इंकलाबी कदम था, जो नयी और रचनात्मक तबदीली का सूचक बन गया।

श्री गुरु नानक साहिब के समय दिल्ली के तख़्त पर लोधी वंश के पठानों का शासन था और इसी समय के दौरान बाबर के नेतृत्व में मुगलों ने हिंदुस्तान पर हमला किया। श्री गुरु नानक साहिब का संवेदनशील मन बाबर द्वारा की गई मानवीय तबाही को देख कर बहुत दुखी हुआ। उन्होंने अपनी बाणी में इसका वर्णन किया है। जहाँ इस हमले के विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलंद करते मुग़ल बाबर को 'जमु' अर्थात् 'मृत्यु' का दूत' कहा, वहीं वे शासन कर रहे पठान हाकिमों को लानत देते हैं कि *''सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई।।''* अर्थात् प्रजा की रक्षा करना और प्रजा को न्याय देना राजा का कर्त्तव्य है। अगर गऊओं के झुंड पर शेर हमला कर दे तो गऊओं के मालिक से अवश्य पूछा जायेगा कि वह कहाँ था। उसने अपने झुंड की सुरक्षा क्यों नहीं की?'' इसके साथ ही बाबर के हमले से सम्बन्धित राग आसा में ही उच्चरित एक अन्य शबद में लोगों को सचेत करते हैं कि मानव को अपने स्वाभिमान एवं जान-माल की सुरक्षा के लिए ख़ुद मज़बूत होना पड़ता है, अपनी रक्षा ख़ुद करनी पड़ती है— *''कोटी हू पीर वरजि रहाए जा मीरु सुणिआ धाइआ।। थान मुकाम जले बिज मंदर मुछि मुछि कुइर रुलाइआ।। कोई मुगलु न होआ अंधा किनै न परचा लाइआ।।''*

दसम पातशाह तक आते-आते गुरु साहिबान की कृपा द्वारा तलवार ने कृपाण का रूप धारण किया, जिसे ज़ुल्म के ख़िलाफ़ तथा मज़लूमों की रक्षा के लिए इस्तेमाल करने का हुक्म हुआ। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गोदावरी नदी के किनारे नांदेड़ में ज्योति-जोत समाने से पूर्व बाकायदा परंपरा के अनुसार गुरुआई श्री गुरु ग्रंथ साहिब को सौंप कर पंथ को शबद-गुरु के लड़ लगा दिया और पंथ को हुक्म किया कि भविष्य में वह अपने सभी फ़ैसले शबद-गुरु के नेतृत्व में स्वयं करेगा। सामूहिक रूप से ख़ालसा द्वारा किए गए फ़ैसले को किसी अकेले, एकमात्र 'प्रधान' को चुनौती देने का हक नहीं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर को अमृत छका कर वैरागी से खालसा बना दिया और पाँच सिंघों के जत्थे के साथ पंजाब मुगलों के साथ टक्कर लेने के लिए भेजा। बाबा बंदा सिंघ बहादुर से सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया तक का बहुत छोटा, मगर बहुत-सी घटनाओं से भरपूर ख़ालसे का सफ़र इतिहास का अहम हिस्सा है। इतिहासकारों ने जौनपुर के सिक्खों के नाम लिखी बाबा बंदा सिंघ बहादुर की चिट्ठी के हवाले के साथ लिखा है कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने ख़ालसे को गुरु-बताए सिद्धांतों की पूर्ण तौर पर पालना करने के लिए कहा। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने शासन करने के बहुत थोड़े-से समय में ही जागीरदारी प्रबंध को तोड़ कर ज़मीन किसानों में बाँट दी और अपने ऊपर लोगों की ज़ुल्म के ख़िलाफ़ रक्षा करने और उनकी सेवा करने का जिम्मा लिया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने श्री गुरु नानक साहिब और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर सिक्का चलाया और इस थोड़े-से समय में ही *''बेगम पुरा सहर को नाउ''* को अमली जामा पहनाने की पूरी कोशिश की। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हाथों अमृत-पान किया था और जीवन भर वह गुरु का सच्चा सिक्ख रहा, गुरु के मिशन में उसने पूर्ण भरोसा बनाए रखा।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया की पारिवारिक पृष्टभूमि में न जाते हुए, जैसे पहले कहा जा चुका है, बात उस सैद्धांतिक पृष्टभूमि और उस फलसफे को अमली जामा पहनाने की ही की जायेगी। इतिहासकारों के अनुसार सरदार जस्सा सिंघ का जन्म ३ मई, १७१८ ई. को हुआ और १७२२ ई. में उनके पिता बदर सिंघ परलोक सिधार गये, जिस कारण सरदार जस्सा सिंघ की माता उन्हें लेकर माता सुंदरी जी की छत्र-छाया में पालन-पोषण के लिए दिल्ली चली गई। दोनों माँ-पुत्र कुछ अरसा माता सुंदरी जी की देख-रेख में रहे। सरदार जस्सा सिंघ की माता गुरबाणी का बहुत बढ़िया कीर्तन किया करती थी। माता सुंदरी जी का दोनों के साथ बहुत स्नेह हो गया। सरदार जस्सा सिंघ का मामा सरदार बाघ सिंघ नि:संतान था जिस कारण माता सुंदरी जी से विनती कर वह माँ-पुत्र को अपने साथ ले आया। दिल्ली से वापसी पर वे जलंधर ठहरे, जहाँ उनकी भेंट नवाब कपूर सिंघ के साथ हुई, जिन्होंने सरदार जस्सा सिंघ की माता का कीर्तन बहुत पसंद किया

तथा सरदार बाघ सिंघ से सरदार जस्सा सिंघ को अपनी देखरेख में प्रवान चढ़ाने के लिए माँग लिया। यहाँ से ही सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया का अगला सफ़र तय होता है। जब उनके मामा सरदार बाघ सिंघ की मृत्यु हुई, तब उनकी आयु मात्र १३ वर्ष थी और वे अपने मामा के वारिस बने। उन्होंने खंडे-बाटे की पाहुल नवाब कपूर सिंघ के जत्थे से छकी थी। वे निर्भय और बहादुर जवान बन कर उभरे। इतिहासकारों के अनुसार उनके राजनैतिक गुणों, धार्मिक उत्साह और बुलंद आकांक्षाओं ने मिल कर उन्हें पंजाब के ताकतवर प्रमुखों में से एक बना दिया।[२] सरदार जस्सा सिंघ के हाथों अमृत छकने में सिक्ख अपना अहोभाग्य समझते थे। वे बहुत ही काबिल नेता थे, जिनका सम्मान सभी सिक्ख किया करते थे। उनमें जत्थेबंदक ताकत कमाल की थी, जो उस समय सिक्खों के जत्थेबंद होने में साफ़ नज़र आ रही थी। यह ताकत उन्होंने नवाब कपूर सिंघ के नेतृत्व से प्राप्त की थी। अहमद शाह दुर्रानी भारत पर १७४८ ई. में पहला हमला करने के बाद पंजाब खाली कर जब वापस लौटा गया तो नवाब कपूर सिंघ ने प्रस्ताव रखा, जिसे मानते हुए सिक्खों ने जत्थेबन्दक एकता करने का फ़ैसला किया। १७४८ ई. की बैसाखी को श्री अमृतसर साहिब में जलसा कर 'दल खालसा' का जत्थेबन्दक ढांचा अस्तित्व में लाया गया, जिसकी कमान सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को सौंपी गई। सिक्खों के अलग-अलग समूहों को इकठ्ठा कर १२ प्रमुखों की कमान तले जत्थेबन्द किया गया। जब १७६१ ई. की दीवाली को श्री अमृतसर साहिब में सरदार जस्सा सिंघ की कमान तले फ़ैसला किया गया कि 'दल खालसा' लाहौर पर चढ़ाई करेगा तो लाहौर के प्रमुख शहरी इकठ्ठा होकर सरदार जस्सा सिंघ से मिले कि अगर वह लोगों की सुरक्षा और ख़ैरियत का वादा करे तो लाहौर निवासी शहर में उसकी आमद का स्वागत करेंगे। इससे आम लोगों का सिक्खों के प्रति जिस किस्म का विश्वास था, वह भली-भांति प्रकट होता है।

बड़े घल्लूघारे के समय अफगानों के ख़िलाफ़ सरदार जस्सा सिंघ ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। जब अफगानों के जाने के बाद सिक्ख आला सिंघ के खिलाफ खड़े हुए, जिसने अफगानों को खुश कर 'राजा' का ख़िताब ले लिया था, तो यह जस्सा सिंघ ही था जिन्होंने सिक्खों को आला सिंघ की मजबूरी को समझने के लिए कहा और उसके साथ किसी किस्म का गलत व्यवहार करने से रोका।[३] इसका सेहरा सरदार जस्सा सिंघ के नेतृत्व को ही जाता है कि १७६६ ई. में जब आखिरी बार अहमद शाह पंजाब में दाख़िल हुआ तो सिक्खों ने उसका लगातार जीना हराम कर दिया और वह वापस चला गया। १७८० ई. में जब सरदार जस्सा सिंघ ने कपूरथला जीत लिया और इसे अपनी राजधानी बना लिया तो सिक्ख परंपराओं की पालना करते हुए उन्होंने राय इब्राहिम को अपनी चल जायदाद और परिवार सहित सुरक्षित जाने

दिया गया। कहा जाता है कि उसके पुत्र और पुत्री को गुज़ारे के लिए एक गाँव भी जागीर के रूप में दे दिया गया। सरदार जस्सा सिंघ ने राजसी गौरव प्राप्त करने से दो बार १७६१ ई. तथा १७८३ ई. में इन्कार किया।

सरदार जस्सा सिंघ अनेक गुणों के मालिक थे, जिनका सिक्खों में बेहद सम्मान था। वे एक महान योद्धा, बहादुर जरनैल और शानदार प्रबंधक थे। कहा जाता है कि उनके शरीर पर लगभग तीन दर्ज़न निशान थे, जो तलवार के वार, गोलियों के जख्मों के थे। ये सभी निशान उनके शरीर के सामने वाले हिस्से पर थे। कोई भी निशान शरीर की पीठ आदि पर नहीं था। इसका यही मतलब है कि उन्होंने गुरु के हुक्म का पालन करते हुए जंग में दुश्मन को कभी भी पीठ नहीं दिखाई थी। काज़ी नूर मुहम्मद ने सरदार जस्सा सिंघ को अहमद शाह अब्दाली के सातवें हमले के समय १७६५ ई. में युद्ध में लड़ते हुए अपनी आँखों के सामने देखा था। उसने अपने 'जंगनामा' में लिखा है कि ''जस्सा कलाल केंद्र में था, जो निडर होकर एक पर्वत की भांति खड़ा था।''[४] एक बहुत ही सफल कमांडर और बहादुर होने के बावजूद वह एक संत-पुरुष और सिक्खी उसूलों से सुसज्जित था, जिसका सिक्ख बहुत ज़्यादा सम्मान किया करते थे और उसके हाथों अमृत छकना अपना सौभाग्य समझते थे। विभिन्न रियासतों के राजा उसके सम्मान में हाथ जोड़ कर खड़े हो जाया करते थे और उसके घुटने स्पर्श किया करते थे। वे अति विनम्र थे और अपने आप को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का मसकीज और श्रद्धालु सिक्ख समझते थे। दूसरे धर्मों के प्रति वे अति सहनशील थे। उनके बहुत-से मुसलमान कर्मचारी थे, जिन्हें अपना धर्म-पालन करने की पूरी इजाजत थी। उनका विरोध मुग़ल या अफगान शासकों के साथ उनकी धर्मांधता पर आधारित जुल्म के कारण था, इसलाम के कारण नहीं। वे बहुत फराखदिल और सखी स्वभाव के थे, जिनके पास आकर प्रतिदिन सैकड़ों लोग परशादा छकते थे। वे प्रत्येक जरूरतमंद की मदद किया करते थे। आम दिनों में वह मर्यादा के अनुसार बाणी पढ़ने के बाद, भोजन छक कर अपने रोज़मर्रा के कर्त्तव्य निभाते और तीन बजे दरबार लगाते, जिसमें जो भी चाहता शामिल हो सकता था। उन्होंने श्री अनंदपुर साहिब और श्री अमृतसर साहिब की सेवा-संभाल करवाई और श्री अमृतसर साहिब को सुंदर बनवाया। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के नेतृत्व के कारण ही यह संभव हो सका कि मुल्क को अफगानों, मुगलों या तुर्कों के हाथों होने वाले आक्रमणों एवं लूट-मार से निजात मिली।

संदर्भिका :

१. Dr. Bhagat Singh, A HISTORY OF THE SIKH MISALS, (PUBLICATION BUREAU, PUNJABI UNIVERSITY, PATIALA), P.27
२. उपरोक्त, पृष्ठ ६०
३. उपरोक्त, पृष्ठ ६३
४. उपरोक्त, पृष्ठ ६९

सिक्ख पंथ के महान नायक : बाबा खड़क सिंघ

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर' **

सिक्ख पंथ की चढ़दी कला (आन, बान, शान) के लिए और गुरुद्वारा साहिबान के सम्मान को कायम रखने के लिए जिन पंथ-हितैषियों ने निष्ठापूर्वक एवं नि:स्वार्थ-भाव से सेवा को अंजाम दिया है, उनमें बाबा खड़क सिंघ का नाम मुख्य रूप से शामिल है। उनका जन्म ६ जून, सन् १८६८ ई. को जिला सियालकोट (अब पाकिस्तान) में एक प्रसिद्ध ठेकेदार व प्रमुख उद्योगपति राय बहादुर स. हरी सिंघ के गृह में हुआ था। वे पढ़ाई में निपुण थे। उन्होंने सियालकोट के मिशन हाई स्कूल से दशम कक्षा पास करने के बाद स्थानीय मर्रे कॉलेज से एफ. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। फिर बाबा खड़क सिंघ ने सरकारी कॉलेज लाहौर से बी. ए. की उपाधि प्राप्त की। यह कॉलेज पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर से संबंधित था। वे बी. ए. पास करने वाले सन् १८८९ के सबसे पहले अकादमिक सत्र के विद्यार्थियों में शामिल थे। इसके बाद वे वकालत में डिग्री प्राप्त करने के लिए इलाहाबाद के लॉ कॉलेज में दाखिल हो गए। अल्प अंतराल में पिता जी तथा बड़े भाई की हुई मृत्यु के कारण उन्हें वकालत की पढ़ाई बीच में छोड़ सियालकोट लौटना पड़ा।

बाबा खड़क सिंघ को सन् १९१२ में सियालकोट में आयोजित पांचवीं सिक्ख एजूकेशनल कॉन्फ्रेंस की स्वागत समिति का प्रधान नियुक्त किया गया। इस कॉन्फ्रेंस में उनके सख्त विरोध के कारण प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेज़ों की विजय की कामना करने वाला चापलूसी भरा प्रस्ताव पास नहीं हो सका। इससे उनकी कीर्ति सच्चे देशभक्तों में फैल गई।

श्री अमृतसर साहिब में हुए जलियां वाला बाग खूनी साके ने उन्हें भीतर तक झकझोर डाला। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन हमेशा के लिए सिक्ख कौम तथा देश के प्रति समर्पित कर दिया। बाबा जी सन् १९२० में स्थापित हुई 'सेंट्रल सिक्ख लीग' के प्रथम प्रधान बने। इसी वर्ष लाहौर में 'सेंट्रल सिक्ख लीग' के ऐतिहासिक सत्र में उनके आदेशानुसार सिक्खों ने महात्मा गांधी द्वारा चलाए जा रहे 'असहयोग आंदोलन' में भाग लेने का निर्णय लिया। इस ऐतिहासिक सभा में गांधी जी, डॉक्टर सैफुद्दीन किचलू, मौलाना मोहम्मद अली, मौलाना शौकत अली जैसे नेता शामिल हुए थे।

बाबा खड़क सिंघ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के दूसरे प्रधान बने। उन्होंने सबसे पहले श्री दरबार साहिब (श्री अमृतसर साहिब) के तोशाखाना की चाबियां वापस लेने हेतु मोर्चा लगाया। श्री दरबार साहिब के तोशाखाना की चाबियां श्री अमृतसर साहिब के अंग्रेज जिला उपायुक्त के कब्ज़े में थीं। उन्हें २६ नवंबर, १९२१ ई. को फिरंगी सरकार के विरुद्ध भाषण देने के कारण छ: माह के लिए जेल भेज दिया। सिक्खों के भारी आक्रोश के कारण बाबा खड़क सिंघ को

*बी-एक्स-१२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०

१७ जनवरी, १९२२ ई. को रिहा कर दिया गया और तोशाखाना की चाबियां भी सौंप दी गईं।

४ अप्रैल, १९२२ ई. को अंग्रेज़ सरकार ने बाबा खड़क सिंघ को कृपाण तैयार करने वाली फैक्टरी लगाने के दोष में एक वर्ष के लिए डेरा गाजी खान जेल में कैद कर दिया। बाद में इस सजा में तीन वर्ष की वृद्धि यह कहते हुए कर दी गई कि उनके भाषणों में बगावती तेवर भरे हुए थे। जब बाबा जी डेरा गाज़ी खान जेल में कैद थे, तब अंग्रेज सरकार के आदेशानुसार जेल में बंद देशभक्तों की दसतार तथा गांधी टोपी जेलर ने बलपूर्वक उतरवा दी। रोष-स्वरूप बाबा खड़क सिंघ ने जेल में कोई भी लिबास पहनने से मना कर दिया। उन्होंने लगभग चार वर्ष तक मात्र कछहिरा और ककार ही पहने।

इस देश को स्वतंत्र करवाने हेतु अनेक सिक्खों ने अपना-अपना योगदान दिया है। बाबा खड़क सिंघ भी देश की आज़ादी की खातिर अनेक बार जेल गए। न तो वे अलग देश पाकिस्तान के हक में थे और न ही विभाजित एवं अधूरे पंजाब के हक में थे। वे चाहते थे कि सिक्खों की इच्छा का सम्मान किया जाए। सन् १९२८-२९ में बाबा जी ने 'नेहरू कमेटी रिपोर्ट' का तब तक विरोध किया, जब तक कांग्रेस पार्टी ने इस रिपोर्ट को रद्द करके बाबा जी का देश के संविधान की हर प्रस्तावना में ''सिक्खों की सहमति जरूरी है'' नामक प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर लिया।

सन् १९२८ में बाबा खड़क सिंघ ने भी लाहौर में 'साईमन कमिशन' के विरुद्ध प्रदर्शन किया था। 'साईमन कमिशन' की सिफारिशों के विरुद्ध एक जन सभा में यादगारी तकरीर करते हुए उन्होंने कहा था— ''भारत की आज़ादी की लड़ाई में अगर आपको मेरी पीठ पर गोली दागी हुई मिले, तो मुझे गुरु का सिक्ख मत समझना और सिक्ख मर्यादा के अनुसार मेरी देह का संस्कार भी मत करना। महान् गुरु साहिबान का पैरोकार एक आदर्श संत-सिपाही होता है और उससे आशा की जाती है कि वह आगे बढ़कर रण में लड़े। अपनी पीठ पर नहीं, बल्कि अपनी छाती पर गोली खाए। हम सिक्ख अपनी मातृ-भूमि पर किसी विदेशी को शासन नहीं करने देंगे। हम कोई अन्याय भी सहन नहीं करेंगे।''

उनकी जोश भरी तकरीर सुनकर पूरी जन सभा में 'बोले सो निहाल, सति श्री अकाल' के जैकारे (जयघोष) से वातावरण गूंज उठा।

देश की आज़ादी के संघर्ष को ऊर्जा प्रदान करते हुए सिक्खों ने बाबा खड़क सिंघ के नेतृत्व में १८ जून, १९२९ ई. को लाहौर में एक विशाल व प्रभावशाली जलूस (रोष-प्रदर्शन) निकाला। इसके एक दिन बाद 'सर्व हिंद कांग्रेस कमेटी' ने रावी दरिया के किनारे (लाहौर में ही) एक समागम आयोजित किया, जो कि सिक्खों के जलूस के मुकाबले मद्धिम रहा। इस संबंध में लंदन के अखबार 'टाइम्ज़' ने भी टिप्पणी की, ''सिक्खों के जलूस के मुकाबले कांग्रेस का जलसा मद्धिम रहा।''

यह स्पष्ट है कि बाबा खड़क सिंघ ने जहां एक ओर भारत की आज़ादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, वहीं सिक्खी को प्रफुल्लित करने के लिए भी उन्होंने जी-जान से योगदान दिया।

बाबा खड़क सिंघ ९५ वर्ष की आयु में ६ अक्तूबर, १९६३ ई. को दिल्ली के सिविल लाइन्स क्षेत्र में पंचतत्व में विलीन हो गए। सिक्खों के बेताज बादशाह बाबा खड़क सिंघ का अंतिम संस्कार सिक्ख धर्म की रिवायत के अनुसार जिला श्री मुकतसर साहिब के गांव सिक्खांवाला में किया गया था।

रेलगाड़ी रोककर भूखे सिक्ख कैदियों को लंगर छकाने की गाथा

*-डॉ. राजविंदर सिंघ जोगा**

दुनिया में बसते प्रत्येक प्राणी के लिए भोजन मुख्य ज़रूरत होती है। प्रत्येक प्राणी-मात्र को अपने पाँच भूतक शरीर को जिंदा रखने के लिए भोजन अपेक्षित है। भोजन सादा या बहुत बढ़िया हो अर्थात् किसी भी प्रकार का हो, मनुष्य अपने सामर्थ्य के अनुसार छकता ही है। इसके बिना लंबा समय शरीर का जिंदा रहना मुश्किल होता है। सिक्ख धर्म में भूखे को भोजन छकाना महान सेवा माना जाता है। श्री गुरु नानक देव जी ने बचपन में ही भूखे साधुओं को भोजन छका कर इसकी बुनियाद रख दी थी। गुरु साहिब ने सिक्खों को 'नाम जपो, किरत करो और वंड छको' के सिद्धांत पर चलने का हुक्म किया। इस सिद्धांत को सिक्खों ने अपने जीवन में अपनाया और उस दिन से यह सेवा निरंतर जारी है। गुरुद्वारा साहिबान में से कोई भी प्राणी भूखा नहीं जाता और बिना किसी भेदभाव के एक ही पंगत में बैठ कर परशादा छक सकता है। सिक्ख किसी भी भूखे प्राणी को भोजन छका कर अति प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। गुरु-सिद्धांतों के अनुसार सेवा करके दुनिया में सिक्ख धर्म ऐसा धर्म बन गया है, जिसने समूचे संसार में विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएं निभा कर अपनी अलग पहचान बना ली है। दुनिया के किसी भी कोने में किसी भी तरह की कोई प्राकृतिक आपदा आ जाए, वहाँ जाकर ये समय अनुसार आवश्यक पदार्थों का लंगर लगा देते हैं। इस सिद्धांत का सीधा सम्बन्ध गुरुद्वारा संस्था के साथ है। गुरुद्वारा साहिबान सिक्खों के लिए जिंद-जान से अधिक प्रिय और आदरणीय स्थान हैं। गुरुद्वारा साहिब की सेवा-संभाल के लिए सिक्खों को असंख्य कुर्बानियां देनी पड़ी हैं। हमें पहले गुरुद्वारा साहिबान की पृष्टभूमि के बारे में भी समझ लेना चाहिए।

श्री गुरु नानक देव जी ने 'धरमसाल' की स्थापना की। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के समय तक यही नाम 'धरमसाल' रहा। पंचम पातशाह ने सबसे पहले अमृत सरोवर में श्री दरबार साहिब की स्थापना कर 'हरिमंदर' संज्ञा दी। फिर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के समय में 'धरमसाल' की 'गुरुद्वारा' संज्ञा हुई। सिक्ख धर्म में सिक्खों के लिए 'गुरुद्वारा' साहिब का विशेष स्थान है। *''गुरू दुआरै होइ सोझी पाइसी''* के महावाक्य के अनुसार इस पवित्र स्थान पर जाकर सिक्ख जहाँ धर्म-कर्म कमाने का ज्ञान लेते हैं, वहीं आदर्श जीवन-जाच सीखते हैं। भाई कान्ह सिंघ नाभा ने 'महान कोश' में

**सहयोगी संपादक, गुरुद्वारा गज़ट, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, फोन : ९४६४७-५२६०३*

'गुरुद्वारे' की बहुत बढ़िया परिभाषा दी है। वे लिखते हैं कि गुरु का मार्फत, गुरु के जरिए, (संज्ञा)–गुरु का घर, सिक्खों का धर्म–मंदिर अर्थात् वह स्थान जहाँ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश होता है। सिक्खों का गुरुद्वारा विद्यार्थियों के लिए स्कूल, आत्म जिज्ञासा वालों के लिए ज्ञान–उपदेशक आचार्य, रोगियों के लिए शफ़ाख़ाना, भूखों के लिए अन्नपूर्णा, स्त्री जाति की आबरू बचाने के लिए लौहमयी दुर्ग और मुसाफ़िरों के लिए विश्राम का स्थान है।''

सिक्ख गुरु साहिबान ने स्वयं गुरुद्वारा साहिबान की स्थापना की, इसीलिए ये गुरु–स्थान सिक्खों के लिए जान से अधिक प्यारे हैं। गुरु साहिबान द्वारा इन धार्मिक केंद्रों और स्थानों की स्थापना करना उस समय की मुग़ल हुकूमत के लिए बड़ी चुनौती थी, इसी लिए मुग़लिया सलतनत की तरफ से अपने समय में गुरु साहिबान को किसी एक जगह पर ठहरने से रोकने के लिए मुश्किलें पैदा की जाती थीं। दूसरा, गुरु साहिबान भी अपने उत्तराधिकारियों को एक जगह से दूसरी जगह जाकर प्रचार करने और धार्मिक केंद्र स्थापित करने का हुक्म दिया करते थे। इसीलिए गुरु साहिबान से सम्बन्धित बहुत–से ऐतिहासिक स्थान अस्तित्व में आए और ये सिक्खों के लिए श्रद्धेय बन गए।

समय की सरकारों ने इन पवित्र स्थानों के प्रति श्रद्धा को सिक्ख हृदयों में से ख़त्म करने के लिए विशेष प्रयत्न किये, मगर वे अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकीं। पहले मुग़ल हुकूमत ने सिक्खों के गुरु–स्थानों को ढह–ढेरी करने की कोशिश की, फिर अंग्रेज़ सरकार ने गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध को अपने अधीन कर अपनी मंशा के अनुसार चलाने की कोशिश की। उन्होंने गुरु–स्थानों में सेवा निभा रहे महंतों को लालच देकर या डरा–धमका कर अपने अधीन कर लिया था। महंत उनके द्वारा दिए प्रोत्साहन के कारण अपनी मनमर्जियां करने लगे थे। गुरु–घरों में जाने वाली संगत इनके व्यवहार से परेशान थी। ये लोग गुरु–स्थानों में गुरमति की विचारधारा की धज्जियाँ उड़ा रहे थे। संगत में आई महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार किया जाया। नौबत यहाँ तक पहुंच गई थी कि नौजवान लड़कियों के साथ कुकर्म भी होने लगे थे। महंत गुरुद्वारा साहिबान की भेंट–सामग्री एवं जागीरों को अपनी मलकियत समझ कर निजी स्वार्थ हेतु प्रयोग किया करते थे। इसी के परिणामस्वरूप गुरु–घरों में हो रही मनमति को रोकने के लिए, अंग्रेज़ सरकार की अधीनता से निकाल कर गुरु–घर की सेवा–संभाल करने के लिए और गुरुद्वारा प्रबंध को सभ्यक ढंग के साथ चलाने के लिए सिक्ख नेताओं ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापना की। इस कमेटी ने बहुत–से गुरुद्वारा साहिबान को अंग्रेज़ सरकार द्वारा स्थापित किए कुकर्मी महंतों से आज़ाद करवा कर अपने अधीन ले लिया। इस शृंखला में 'गुरुद्वारा गुरू का बाग़' का मोचा विशेष स्थान रखता है। यह स्थान पंचम एवं नवम् पातशाह के चरणों का स्पर्श प्राप्त स्थान है।

गुरुद्वारा गुरु का बाग़, गांव घुक्केवाली, जिला

श्री अमृतसर साहिब पर महंत सुंदर दास काबिज़ था, जो अति दर्जे का शराबी और बदचलन था तथा अंग्रेज़ सरकार की शह पर मनमर्जियां करता था। इसके कुकर्मों से संगत बहुत परेशान थी। इसके कब्ज़े से गुरुद्वारा साहिब को आज़ाद करवाने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के नेताओं ने सिक्ख संगत के सहयोग से मोर्चा शुरू किया। कमेटी के नेतृत्व में श्री अकाल तख़्त साहिब से अरदास करने के पश्चात् पाँच-पाँच सिक्खों का जत्था शांतमयी रहने का प्रण कर प्रस्थान करता। फिर इन जत्थों में जाने वाले सिंघों की संख्या सौ-सौ और फिर इससे भी अधिक हो गई थी। इनको रास्ते में पुलिस के अत्याचार का शिकार भी होना पड़ता। जैसे श्री गुरु अरजन देव जी ने मुग़ल हुकूमत के सम्मुख शांतमयी रहते हुए शहादत प्राप्त की थी, उसी प्रकार इस पावन स्थान को आज़ाद करवाने के लिए असंख्य सिक्खों ने शांतमयी रहते हुए पुलिस का अत्याचार सहन किया।

अंग्रेज़ सरकार ने इस मोर्चे को असफल बनाने के लिए प्रत्येक प्रयास, प्रत्येक साधन इस्तेमाल किया। मोर्चे में शामिल होने वाले सिक्खों पर ज़ुल्म ढाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी गई। उन्हें डंडों, लाठियों, बंदूकों की मुट्ठियों आदि से बेरहमी के साथ पीटा जाता था और घायल सिक्खों को घोड़ों के पांव के नीचे कुचला जाता था। यहाँ तक कि मोर्चे में शामिल होने वाले सिक्खों की मदद करने वाले व्यक्तियों को भी नहीं छोड़ा गया। बहुत-से सिक्ख पुलिस की मार से ज़ख़्मी हुए और शहादत प्राप्त कर गए। अंग्रेज़ सरकार ने मोर्चे में भाग लेने वाले जत्थों पर अत्याचार करने के पश्चात् कितने ही सिक्ख गिरफ़्तार कर जेलों में भर दिए थे। गिरफ्तार सिक्खों की संख्या बढ़ने के कारण श्री अमृतसर साहिब और निकटवर्ती जेलें भर गई थीं। वहाँ से सिक्खों को रावलपिंडी, अटक तथा अन्य जेलों में तबदील करने के लिए रेलगाड़ी के माध्यम से भेजना शुरू कर दिया गया। एक रेलगाड़ी रात को श्री अमृतसर साहिब से भर कर अटक की जेल की तरफ जा रही थी। यह रेल गुजरांवाला (अब पाकिस्तान) पहुँची। इस इलाके की सिक्ख संगत को सिक्ख कैदियों को ले जाने वाली रेलगाड़ी के बारे में पता चला तो उन्होंने भूखे सिक्ख कैदियों को लंगर छकाने का विचार बनाया। कुछ प्रमुख सिक्खों ने गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब हसन अब्दाल के स्टेशन मास्टर के साथ बात की। उसने बताया कि यहाँ रेलगाड़ी रोकने का आदेश नहीं है, इसलिए रेलगाड़ी यहां पर नहीं रुकेगी। संगत को बहुत निराशा हुई। उस समय भाई प्रताप सिंघ और भाई करम सिंघ ने संगत से कहा कि आप लंगर तैयार करो, गाड़ी अवश्य रुकेगी। रेल में सवार सिक्ख वीरों को लंगर छका कर ही आगे जाने दिया जायेगा। संगत रेलगाड़ी की पटड़ी पर बैठ गई। रेलगाड़ी जब स्टेशन के नज़दीक आई तो उक्त दोनों सिक्ख आगे बढ़कर रेलगाड़ी की पटड़ी पर शीश रख कर लेट गए। रेलगाड़ी के चालक ने यह देख कर बहुत हार्न बजाया, परंतु सिक्खों ने

कोई परवाह न की। सारी सिक्ख संगत मौत से निडर थी। रेलगाड़ी तेज गति से आती हुई दोनों सिक्खों को कुचलती हुई आखिर रुक गई। भाई प्रताप सिंघ और भाई करम सिंघ के शरीर रेलगाड़ी के पहियों में फंस गए। और भी सिक्ख घायल हो गए। वहां उपस्थित सिक्ख संगत द्वारा इन दोनों सिक्खों को रेलगाड़ी के पहियों में से बाहर निकाला गया। वे अभी सिसक रहे थे। बाकी घायल सिक्खों की भी देखभाल की जा रही थी। इस समय भाई प्रताप सिंघ और भाई करम सिंघ ने कहा कि ''पहले रेलगाड़ी में बैठे वीरों को लंगर छकाओ, हमारी संभाल फिर कर लेना। रेलगाड़ी में सवार सभी सिक्खों को लंगर छकाया गया। वचन के बली सिक्ख योद्धाओं का कारनामा देखो, भूखे संघर्षशील कैदी सिक्खों को लंगर छकाने के लिए उन्होंने अपनी जान तक कुर्बान कर दी। अंग्रेज़ सरकार तो गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के मोर्चे में जाने वाले सिक्खों की आस्था को देखते हुए पहले से ही परेशान थी, इस घटना के बाद चारों तरफ़ सिक्खों की शांतमयी कुर्बानी की चर्चा ने उन्हें और भी परेशान एवं पराजित कर दिया।

यह है सिक्ख इतिहास की एक विलक्षण गाथा कि भूखे कैदियों को परशादा छकाने की सेवा करने के लिए सिक्ख संगत ने अपनी जान की भी परवाह नहीं की। सामने मौत दिख रही थी, फिर भी कर्त्तव्य-पालन के नाम पर मौत को गले से लगाना वीरता की पराकाष्ठा ही है। ऐसे महान योद्धाओं के साहस भरे कारनामों के साथ सिक्ख इतिहास भरा पड़ा है। आज ज़रूरत है सिक्खों के जीवन-संग्राम को विश्व-पटल पर पेश करने की!

समय-समय की सरकारों द्वारा सिक्ख धर्म को ख़त्म करने के लिए नाकाम कोशिशें की जाती रही हैं जो आज भी जारी हैं, सरकारों का यह कुटिल मिशन न कभी सफल हुआ और न ही होगा। यह साहसी और जाँनिसारों की कौम है। इसकी बुनियाद में गुरु साहिबान के शीश की ईंटें लगी हैं। जिस कौम ने अपने शरीर के बंद-बंद कटवाए हों, खोपड़ी उतरवाई हो, अपने लख्त-ए-जिगर बच्चों के टुकड़े-टुकड़े करवा कर गले में माला बनाकर पहनी हो, उसे ख़त्म करना तो दूर की बात, दबाया जाना भी नामुमकिन है।

मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग़ और साका गुरुद्वारा पंजा साहिब ऐसे मोर्चे हैं, जिनमें सिक्खों के धैर्य व बहादुरी के दर्शन होते हैं। पहले सिक्खों ने शांतमयी रहते हुए बी. टी. की लाठियां खायीं, फिर शान्ति के साथ रेलगाड़ी रोक कर भूखे सिक्ख वीरों को लंगर छकाने के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी। ऐसे शूरवीरों को रहती दुनिया तक याद किया जाता रहेगा और अंग्रेज सरकार को लानत-मलामत पड़ती रहेगी।

सिंघ सभा लहर और भाई वीर सिंघ

*– डॉ. धरम सिंघ**

उन्नीसवीं सदी के आखिरी चौथे भाग में सिक्ख समाज में चल रही पुनर्जागरण की लहर 'सिंघ सभा लहर' कहलवाई, जो कि धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक लहर थी, जिसने व्यापक रूप से सिक्ख समाज को प्रभावित किया। भाई वीर सिंघ इस लहर की उपज थे। डॉ. सुरिंदर सिंघ (कोहली) लिखते हैं, "जिस वर्ष सिंघ सभा लहर का जन्म हुआ, उसी वर्ष भाई वीर सिंघ का जन्म हुआ। इस लहर की वृद्धि के साथ ही भाई साहिब भी बड़े होते गए। जब भाई वीर सिंघ जवान हुए, उस समय सिंघ सभा लहर भी पूरे यौवन पर थी।"[१]

सिंघ सभा और भाई वीर सिंघ हम उम्र तो थे ही, हममकसद भी थे, इसीलिए सिक्ख पुनर्नवीकरण के लिए जितने भी यत्न हुए, भाई साहिब किसी न किसी रूप में उसके साथ जुड़े रहे। कई क्षेत्रों में तो उन्होंने पहलकदमी भी की। बीसवीं सदी के प्रथम दशक की बात है कि पंजाब में जगह-जगह पर बनी यंगमैन क्रिश्चियन एसोसिएशनों का प्रभाव सिक्ख नौजवानों पर भी पड़ना शुरू हो गया। यहाँ पर यह बताना उचित होगा कि धार्मिक महत्ता के कारण ऐसे शासकों का सारा ज़ोर इस शहर की पवित्रता को दूषित करने में लगा हुआ था। श्री अमृतसर साहिब में सबसे पहला बूचड़खाना यहाँ खुला, सबसे पहला गिरजाघर खुला और श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की परिक्रमा में से कुछ जगह गिरजाघर बनाने के लिए भी घेर ली गई। उत्तरी दिशा में घंटा घर निर्मित किया। सबसे पहला मिशन स्कूल भी श्री अमृतसर साहिब में ही खुला, जहाँ के चार सिक्ख विद्यार्थी सिक्खी से पतित होने के लिए तैयार हुए। सिंघ सभा लहर दरअसल इसी पृष्ठभूमि में से ही गठित हुई।

सिंघ सभा के आशय को प्रचारित करने, विरासत के प्रति सचेत करने, गुरबाणी की नयी व्याख्या करने, सिक्ख इतिहास के प्रति चेतना जागृत करने और इनमें से प्रेरणा लेकर साहित्य-रचना करने में भाई वीर सिंघ का योगदान सबसे अधिक है, विशेषतया सृजनात्मक साहित्य के प्रसंग में, इसीलिए भाई साहिब को 'पंजाब का छठा दरिया' और 'आधुनिक पंजाबी साहित्य का पितामह' कह कर शोभित किया जाता है। उनके साहित्य का एक नमूना उनके द्वारा रचित उपन्यास 'सुंदरी', 'बिजै सिंघ' और 'सतवंत कौर' हैं। भाई साहिब की साहित्य-रचना का उद्देश्य क्या होगा? इसका स्पष्ट वर्णन उन्होंने इन उपन्यासों की भूमिका में कर दिया है। अपने प्रथम उपन्यास 'सुंदरी' की भूमिका में उन्होंने लिखा है कि "इस पुस्तक के लिखने से हमारा तात्पर्य यह है कि प्राचीन समाचार पढ़ कर, सुन

*११०, रोज एवेन्यू, रामतीर्थ रोड, श्री अमृतसर— १४३१०५ फोन : ९८८८९-३९८०८

कर सिक्ख लोग अपने धर्म में दृढ़ हों। इसी प्रकार 'बिजै सिंघ' की भूमिका में आप लिखते हैं— ''खालसा जी! क्या आपके हृदय में अपने पूर्वजों की निडरता, बहादुरी और निश्चय की तरफ देख कर कुछ प्रेम पैदा नहीं होता? क्या बेपरवाही रूपी कीचड़ से दबे हुए अश्रु के कुएं का कण पाकर आँखों में प्रवाह नहीं चलता?''[२] स्पष्ट है कि भाई वीर सिंघ के उपन्यास-रचना का स्रोत साहित्यिक नहीं, बल्कि सिक्ख प्रेरणादायक जीवन-मूल्य थे। उपन्यास जैसे लोकप्रिय रूपाकार को भाई वीर सिंघ अपने साहित्यिक उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करना चाहते थे और उन्होंने ऐसा ही किया।

हम जानते हैं कि सिक्ख शासकों के रूप में महाराजा रणजीत सिंघ के रूप में पंजाबियों का शासन अल्पकालीन था। महाराजा के देहांत के बाद अंग्रेज़ साम्राज्य ने यह शासन छीन लिया। इस बात का सभी पंजाबियों को ख़ास कर सिक्खों को ज्यादा दुख था। समय की माँग थी कि भाई वीर सिंघ सिक्ख इतिहास, सिक्ख दर्शन और रहित मर्यादा को पंजाब की जनता के सामने रखते, जिससे वे उससे प्रेरणा लेकर नये हाकिमों से निजात पाने की कोशिश करते। सन् १८९३-९४ में जब भाई वीर सिंघ ने गद्य लिखना शुरू किया तो आधुनिक पंजाबी गद्य आरंभ हो चुका था और छापाखाना लगने से पत्रकारिता भी प्रचलित हो चुकी थी। सिंघ सभा लहर के नेताओं ने इसे सिक्ख धर्म के प्रचार का माध्यम बना लिया। 'खालसा ट्रेक्ट सोसायटी' द्वारा प्रकाशित 'निरगुणिआरा' और 'खालसा समाचार' का मुख्य उद्देश्य सिक्ख धर्म में पुनर्जागृति लाकर समाज-सुधार, विद्या-प्रचार, साहित्य-सेवा और पंजाबी भाषा का प्रचार करना था। इन प्रयासों ने पंजाबी पत्रकारिता का निर्माण पक्की राहों पर किया। भाई वीर सिंघ इस सोसायटी को गठित करने से लेकर अपने अंतिम समय तक इसके साथ संलग्न रहे। सिंघ सभा के लक्ष्यों में से एक लक्ष्य अपनी प्राचीन विरासत भी अहम है। सिक्खों को तो जन्म-घुट्टी ही शबद, पोथी और ग्रंथ की मिली है, इसीलिए हम देखते हैं कि प्रत्येक युग में सिक्खों में साहित्य-रचना की चिंगारी देदीप्यमान रही है। भाई वीर सिंघ इन ग्रंथों के प्रति भली-भाँति परिचित थे, क्योंकि उनका घराना है ही विद्वानों का था। भाई साहिब ने जिन ग्रंथों की ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अहमियत समझी थी, उन्हें योग्य ढंग से संपादित कर उनका सरलार्थ किया। भाई वीर सिंघ ने जिन ग्रंथों का संपादन किया, वे निम्नलिखित अनुसार हैं :—

अ) सिक्खां दी भगतमाला (मार्च १९१२ ई.)
आ) प्राचीन पंथ प्रकाश कृत भाई रतन सिंघ भंगू (मार्च, १९१४ ई.)
इ) पुरातन जन्म साखी (९ अगस्त, १९२६ ई.)
ई) श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ (१९२६- १९३५ ई.)
उ) मालवा देश रटन की साखी पोथी (१९५० ई.)

भाई वीर सिंघ की सम्पादन कला के बारे में संक्षिप्त रूप से दो बातें करनी आवश्यक प्रतीत होती हैं। पहली यह है कि इन्होंने जहां तक हो सका खोज-विधि के तकाजों को ध्यान में रखा है। गुरमति की दृष्टि से किसी भी अयोग्य बात

की पूरी तरह से जाँच करने के पश्चात् ही उन्होंने अपनी राय दी है। जहाँ कहीं नुक्तों की स्पष्टता की ज़रूरत पड़ी है, वहाँ फुट नोट दिए हैं, जो कि पृष्ठों में फैल गए हैं। आज ट्रेक्ट या पुस्तिका के रूप में भाई साहिब की एक छोटी-सी रचना 'देवी पूजन पड़ताल' नाम पर मिलती है। यह वास्तव में 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' का एक फुट नोट ही है, जिसमें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा देवी-पूजा की पड़ताल कर अपनी राय दी गई है।

एक अन्य बहुत दिलचस्प बात यह है कि दो ग्रंथों के मूल नाम, जो आज भी प्रचलित हैं— 'प्राचीन पंथ प्रकाश' और 'पुरातन जनम साखी' ऐसे नाम हैं, जो भाई साहिब द्वारा दिए हुए हैं। स. रतन सिंघ (भंगू) वाले ग्रंथ का मूल नाम 'श्री गुरू पंथ प्रकाश' है, परन्तु भाई साहिब ने संपादन के समय 'प्राचीन' शब्द अपने पास से लगा कर 'प्राचीन पंथ प्रकाश' बना दिया और आज यही नाम प्रचलित है। 'पुरातन जनम साखी' का मूल नाम 'साखी श्री बाबे नानक जी की' है, मगर भाई जी ने जन्म-साखियों की पड़ताल कर इसे सर्वाधिक पुरातन जान कर इसका नाम 'पुरातन जनम साखी' रख दिया और आज यही नाम प्रचलित है।

भाई वीर सिंघ ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का टीका करना भी शुरू किया था, जिसकी सात पोथियाँ 'खालसा समाचार' में प्रकाशित हो चुकी थीं। आयु ने भाई साहिब के साथ वफ़ा न की, जिस कारण यह काम अधूरा रह गया। भाई वीर सिंघ की गुरबाणी व्याख्या-प्रणाली को डॉ. तारन सिंघ ने 'सिंघ सभाई प्रणाली' का नाम दिया है। उनके शब्द हैं—— ''जैसे भाई वीर सिंघ की रचनात्मिक प्रतिभा द्वारा पंजाबी साहित्य ने आधुनिकता में प्रवेश किया, वैसे ही उस प्रतिभा द्वारा गुरबाणी की टीकाकारी, व्याख्याकारी और सिद्धांत निर्णय ने आधुनिकता में प्रवेश किया। अगर भाई वीर सिंघ से चली टीकाकारी परंपरा को कोई विशेष नाम देना हो तो इसे 'सिंघ सभाई परंपरा' कहा जा सकता है।''[३]

सिंघ सभा लहर के प्रयोजन में पंजाबी ज़ुबान को उन्नति प्रदान करना, प्रफुल्लित करना और हर लिहाज़ से समय के समानीकरण बनाना था। वैसे भी उन्नीसवीं सदी के अंतिम और बीसवीं सदी के प्रारंभिक दशकों में चले भाषाई विवादों ने पंजाबी को सिक्खों के साथ जोड़ दिया था। शायद इसीलिए उन्होंने अपने शैक्षिक और धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इसे अपना लिया था। सिक्खों की धार्मिक और सांस्कृतिक सरगर्मियों में पंजाबी के कार्य को उभारना ज़रूरी होता गया। भाई वीर सिंघ ने पंजाबी प्रचार के कार्य को धार्मिक कर्त्तव्य के तौर पर स्वीकार किया और पंजाबी व हिंदी की खींचतान से सम्बन्धित जो चर्चा 'खालसा समाचार' में हुई मिलती है वह किसी अन्य समकालीन अख़बार-पत्रिका में मैंने नहीं देखी। इस समय पंजाबी को ख़तरा हिंदी से बना हुआ था और इसमें कुछ आर्य समाजी लोग थे, जिनके नेता लाला लाजपत राय थे। 'खालसा समाचार' में प्रकाशित एक लंबे लेख का तो नाम ही 'लाला लाजपत राय जी' हिंदी ते पंजाबी है, जो अक्तूबर-नवंबर, १९११

ई. के अंकों में प्रकाशित हुआ था। अन्य मतावलम्बियों के साथ संवाद रचाने के बिना भाई वीर सिंघ ने जो अन्य कार्य किया, वो था पंजाबी हितैषियों से लेख लिखा कर 'खालसा समाचार' में प्रकाशित करना। लाला बिशन दास पुरी का एक लम्बा लेख 'पंजाबी दा भंडार भरो!' है, जो उन्होंने पाँचवी सिक्ख एजूकेशनल कान्फ्रेंस में पढ़ा था और जो बाद में 'खालसा समाचार' में शृंखलाबद्ध प्रकाशित हुआ। पुरी जी के पंजाबी के हक में लिखे अन्य कई लेख 'खालसा समाचार' में छपे हुए मिलते हैं। कुल मिला कर कहा जा सकता है कि भाई वीर सिंघ की इच्छा पंजाबी को पंजाबियों के जीवन-व्यवहार और मानसिकता का एक अंग बनाना था और उन्होंने ऐसा कर भी दिखाया। और तो और, खालसा समाचार के पृष्ठों पर हमें कई पुस्तकों के रचित होने के कारणों का भी पता चलता है, जैसे भाई कान्ह सिंघ नाभा की 'हम हिंदू नहीं' और भाई जोध सिंघ द्वारा रचित 'गुरू साहिब ते वेद' आदि।

परिणामस्वरूप हम यह कह सकते हैं कि भाई वीर सिंघ ने सिंघ सभा की ज़रूरतों, इच्छाओं और उसके द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु अपनी साहित्य सृजना की। सिक्ख धर्म की गौरवमयी विरासत को नवीन साहित्य रूपों के माध्यम से प्रचारित करने और तत्कालीन चुनौतियों के सामने सिक्ख धर्म का पक्ष मज़बूती के साथ रखने में भाई वीर सिंघ का अहम योगदान है। सिंघ सभा के साथ जुड़े लेखकों में से आकार और प्रकार पक्ष से वे सबसे बड़े और सामर्थ्यवान लेखक हैं, इसीलिए स. संत सिंघ (सेखों) जैसे आलोचक को यह मानना पड़ा—— ''यह एक आश्चर्य भरपूर बात है कि जहाँ आम तौर पर कौमों के कल्याण और नवीकरण के प्रमुख नेता होते हैं, वहीं आधुनिक पंजाब के पुनर्नवीकरण का प्रमुख नेता, कवि तथा साहित्यकार है और यह साहित्यकार भाई वीर सिंघ है।''

अपनी आज की चर्चा को हम भाई जोध सिंघ के शब्दों के माध्यम से ख़त्म करना चाहेंगे, जिनमें उन्होंने लिखा है—— ''सिंघ सभा के दो आदर्शों—— निरोल गुरमति का प्रचार और पंजाबी भाषा की उन्नति के लिए जितना काम भाई वीर सिंघ ने किया है, उतना काम शायद ही किसी अन्य लेखक ने बीसवीं सदी में किया हो। अंतिम बात यह है कि सिंघ सभा लहर के सभी पक्षों में जितनी सेवा भाई वीर सिंघ ने की उतनी शायद ही अकेले अन्य व्यक्ति ने की हो।''

संदर्भिका :

१. भाई वीर सिंघ : साहितय दर्शन, (स. प. सिंघ और जसबीर सिंघ साबर), पृष्ठ ९८
२. भूमिका, बिजै सिंघ
३. डॉ. तारन सिंघ, गुरबाणी दीआं व्याख्या प्रणालियां, पृष्ठ २९४
४. अधिक जानकारी के लिए देखें, खोज दर्पण, अंक जनवरी २००२, पृष्ठ ९-१७
५. खोज पत्रिका : भाई वीर सिंघ, अंक, सितंबर १९७२
६. भाई वीर सिंघ : साहित्य दर्शन, पृष्ठ ३९ और ४१

सितंबर २०२३ का शेष भाग . . .

सेलुलर जेल अंडमान : पंजाब के स्वतंत्रता संग्रामी-३

*-डॉ. परमवीर सिंह**

स. बुढ्ढा सिंह : पंजाब के तरनतारन ज़िले के गाँव सुरसिंघ के निवासी स. ईशर सिंघ के ये पुत्र थे। १८९१ ई. में पैदा हुए स. बुढ्ढा सिंघ बरेली में बैटरियों का काम करते थे, जिसे छोड़ कर ये शंघाई चले गए। वहाँ इन्होंने चौकीदार की नौकरी कर ली। ग़दर पार्टी की गतिविधियों में भाग लेने के लिए १३ अक्तूबर, १९१४ ई. को ये एस. एस. नामसंग जहाज़ के माध्यम से कलकत्ता पहुँचे। ग़दर लहर के असफल हो जाने के कारण बरेली वापस आकर इन्होंने बैटरियों का काम दोबारा शुरू कर लिया। इनको गिरफ़्तार कर लाहौर लाया गया और द्वितीय लाहौर साजिश केस में ३० मार्च, १९१६ ई. को जायदाद ज़ब्त करने के साथ-साथ उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई। १९१६ ई. में अंडमान भेज दिया गया, जहाँ ये जेल की यातनाओं को सहन न करते हुए अकाल प्रस्थान कर गये।

स. बुढ्ढा सिंघ फ़ैलोके : ये मौजूदा पाकिस्तान के ज़िला गुजरांवाला के गाँव फ़ैलोके के निवासी स. शाम सिंघ के पुत्र थे। मैंडले साजिश केस में इनको काला पानी की सज़ा हुई थी। इनके साथ बहुत घटिया व्यवहार किया जाता था। इनको जेल की कच्ची रोटी हज़म नहीं होती थी। इनकी बीमारी की तरफ किसी ने ध्यान नहीं दिया और अंततः ये मौत के मुँह में चले गये। इनका नाम सेलुलर जेल में लगी हुई शहीदों की लिस्ट में नहीं है। (देखो: भगत सिंघ बिलगा, ग़दर लहर दे अणफोले वरके, पन्ना ९६)

स. भान सिंघ : पंजाब के लुधियाना ज़िले के गाँव सुनेत के निवासी स. सावन सिंघ के ये पुत्र थे। तोशामारू जहाज़ के माध्यम से ये भारत आए थे और यहाँ आकर इन्होंने ग़दर पार्टी लहर की गतिविधियों में सक्रियता से भाग लिया, जिस कारण इनको गिरफ़्तार कर लिया गया। १३ सितम्बर, १९१५ ई. को प्रथम लाहौर साजिश केस में १० वर्ष की सज़ा सुना कर इनको अंडमान भेज दिया। जेल स्टाफ के साथ किसी न किसी बात पर इनका झगड़ा हो जाता था और छोटी-सी गलती पर भी इनको मारपीट और बेड़ियों की सज़ा का सामना करना पड़ता था। जेलर बैरी भी इनके साथ ईर्ष्या करता था। एक दिन वह इनके सेल के सामने से गुज़रा तो इनका आपसी तकरार हो गया, जिस पर जेलर ने नंबरदार तथा अन्य आदमी बुला कर इन पर भारी अत्याचार करवाया। इसी विरोध के कारण इन्होंने जेलर के सामने आने पर खड़े होना बंद कर दिया। इनको खड़ी हथकड़ी की सज़ा सुनाई गई। एक दिन इन्होंने खड़ी हथकड़ी लगवाने से मना करते हुए कहा कि पहले मेरा कसूर बताया जाये। जब जेलर को स. भान सिंघ के मना करने का पता चला तो उसने अपने आदमियों के माध्यम से भाई साहिब को भारी शारीरिक कष्ट दिए। जब वे आदमी जाने लगे तो भाई साहिब ने कहा कि जिंदा छोड़ कर क्यों जाते हो? थोड़ा-सा और यत्न करने से मुझे सदा की नींद आ जायेगी और तुम्हारा हथकड़ी लगाने से पीछा छूट जायेगा। स. भान सिंघ को हथकड़ी न लगवाने के कारण दी गई यातनाओं की ख़बर पूरी जेल में तुरंत फैल गई।

**सिक्ख विश्वकोष विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला— १४७००२, फोन : ८९७२०-७४३२२*

भाई बिशन सिंघ शारीरिक रूप से तगड़े थे और इन्होंने जेलर के पाले हुए सरकारी गुंडों को हथकड़ी लगाने के लिए ललकारा, जिसका वर्णन इन पंक्तियों में इस प्रकार किया गया है :

हथकड़ी लग्गे फिर लौण बिशन सिंघ नूँ,
अग्गों शेर ने आख बताइआ सी।
हथकड़ी नहीं लुऔणी ला लै ज़ोर सारा,
वाहवा शेर ने हत्थ दिखाइआ सी।
कट्ठे गोरे तूँ कर के डाह सारे,
सुपरडैंट नूँ आख सुणाइआ सी।
आ पाज़ीआ वेख तूँ हत्थ छेती,
हथकड़ी ला तूँ जिस तरां आइआ सी।
मरूँ आप जां चीर दऊं तुसां ताईं,
भान सिंघ तुसां किउं ढाहिआ सी।

बाबा भान सिंघ जेलर बैरी के ज़ुल्मों से तंग आ चुके थे और अब ये और ज़ुल्म बरदाश्त नहीं कर सकते थे। जेल में हुए ज़ुल्मों के कारण २ नवंबर, १९१७ ई. को ये अकाल प्रस्थान कर गये। इनकी मौत की ख़बर बंगाल के 'माडर्न रिविऊ' में प्रकाशित हुई तो पूरे देश में शोक की लहर फैल गई। जब सरकार ने अंडमान के चीफ़ कमिशनर से इसकी रिपोर्ट माँगी तो उसने लिख दिया कि ये अपनी मौत खुद ही मरे हैं। ये फ़सादी आदमी थे। इनकी मृत्यु से जेल में शान्ति पैदा होगी। इनका यादगारी बुत अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह की सेलुलर जेल के बाहर लगा हुआ है। जेलर बैरी को देख कर स. भान सिंघ गुरबाणी की ये पंक्तियाँ अक्सर गायन किया करते थे :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ।।
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ।।
इतु मारगि पैरु धरीजै ।।
सिरु दीजै काणि न कीजै ।।

स. मदन सिंघ : वर्तमान पाकिस्तान के लाहौर ज़िले के गाँव गागा के निवासी स. मल्ल सिंघ के ये पुत्र थे। १८८७ ई. में इनका जन्म हुआ। ग़दर लहर में भाग लेने के कारण इनको गिरफ़्तार कर लिया गया। १९१५ ई. के प्रथम लाहौर साजिश केस में इनकी जायदाद ज़ब्त करने और उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई थी। सज़ा काटने के लिए इनको काला पानी भेज दिया गया था।

स. मनोहर सिंघ : ये श्री अमृतसर साहिब के स. लहिणा सिंघ के पुत्र थे। श्री अमृतसर साहिब के नेशनल बैंक कत्ल केस में इन पर मुकद्दमा चलाया गया। २२ जून, १९१९ ई. को मार्शल लॉ के अधीन इनकी जायदाद ज़ब्त करने और मौत की सज़ा सुनाई गई, जो कि बाद में उम्र-कैद में तबदील कर दी गई। इस समय इनकी उम्र २१ वर्ष थी। सज़ा काटने के लिए इनको अंडमान भेज दिया गया।

स. मेहर सिंघ : पंजाब के जलंधर ज़िले के गाँव अलावलपुर के निवासी श्री गुलाबा के ये पुत्र थे। १८७२ ई. में ये कूका लहर के शहीदी जत्थे में शामिल हो गए। मलौद से गिरफ़्तार कर इनको उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई। सज़ा काटने के लिए अंडमान भेज दिया गया।

स. मुनशा/ मनशा सिंघ : पंजाब के जलंधर ज़िले के गाँव जंडिआला के निवासी स. निहाल सिंघ के ये पुत्र थे । लकड़ी के काम के ये कारीगर वैनकूवर में स. करतार सिंघ सराभा के संपर्क में थे। ६ अगस्त, १९१४ ई. को ये भारत के लिए रवाना हुए और जनवरी १९१५ ई. में इन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। ३० मार्च, १९१६ ई. को द्वितीय सप्लीमेंटरी लाहौर साजिश केस में उम्र-कैद की सज़ा सुना कर इनको अंडमान भेज दिया गया।

स. मंगल सिंघ : पंजाब के श्री अमृतसर साहिब ज़िले के गाँव लालपुर के निवासी स. सरमुख सिंघ के ये पुत्र थे। १८८४ ई. में इनका जन्म हुआ। ग़दर लहर में भाग लेने के कारण इनको गिरफ़्तार कर लिया गया। प्रथम लाहौर साजिश केस में १३

सितंबर, १९१५ ई. को इनकी जायदाद ज़ब्त करने और उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई थी। सज़ा काटने के लिए इन्हें अंडमान भेज दिया गया। जेल में ही इनका निधन हो गया था।

स. रणधीर सिंघ : स. जगजीत सिंघ इन्हें पंजाब के लुधियाना जनपद के गाँव नारंगवाल का संत बताते हैं, जिनका जन्म नारंगवाल में हुआ था। Linsung Heroes of freedom Struggle in Andamas शीर्षकधीन पुस्तक में बताया गया है कि १९१६ ई. में इन5की आयु ३८ वर्ष थी और ये नायब तहसीलदार के पद पर कार्यरत थे। द्वितीय लाहौर सप्लीमेंटरी केस में इन पर मुकद्दमा चलाया गया और ३० मार्च, १९१६ ई. को इनको उम्र-कैद की सज़ा सुना कर अंडमान भेज दिया गया।

श्री राजा राम : वर्तमान पाकिस्तान में पंजाब के गुजरात ज़िले के गांव मलकवाला के निवासी श्री गंगा राम और बीबी उत्तम देवी के घर १८९८ ई. में इनका जन्म हुआ। व्यवसाय से व्यापारी इस नौजवान ने रोल्ट एक्ट का विरोध किया, जिस कारण मार्शल लॉ के अधीन इन पर मुकद्दमा चलाया गया। १९१९ ई. में इनको मौत की सज़ा सुनाई गई जो कि बाद में उम्र-कैद में तबदील कर दी गई। सज़ा काटने के लिए इनको अंडमान भेजा गया। १९२०- ३२ ई. के दौरान इस जेल में सज़ा काटने के पश्चात् इन्हें लाहौर, मुलतान और रावलपिंडी की जेल में रख कर १९३४ ई. में रिहा कर दिया गया। १९४१ ई. में सरकार विरोधी भाषण देने के कारण इनको एक वर्ष की कठोर कारावास की सज़ा सुना कर जेहलम जेल में भेज दिया गया। रिहाई के बाद ये रूपोश हो गये।

श्री राम हरी : ये गुरदासपुर के निवासी थे। 'स्वराज' अख़बार के संपादक के तौर पर इन्होंने बहुत-से ऐसे लेख लिखे जो सरकार की नीतियों का विरोध करते थे। दिसंबर १९०८ ई. में १० वर्ष की सज़ा सुनाई गई और अक्तूबर १९१० ई. में इनको अंडमान भेज दिया गया।

श्री राम रक्षा भाले : पंजाब के होशियारपुर ज़िले के गाँव ससोली के निवासी श्री जवाहर राम के ये पुत्र थे। ग़दर लहर में इन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया। लाला सोहन लाल के साथ मिलकर इन्होंने बर्मा, मलाया और सिंगापुर में अंग्रेज़ सरकार के विरुद्ध बग़ावत की योजना बनाई थी। १९१५ ई. में गिरफ़्तार कर मांडले सप्लीमेंटरी साजिश केस के अधीन इन पर केस चलाया गया। उम्र-कैद की सज़ा सुना कर इनको अंडमान भेज दिया गया जहाँ जेल में रखी भूख हड़ताल से १९१९ में इनका देहांत हो गया। इनसे सम्बन्धित सरकारी रिपोर्ट में कहा गया था कि इनका भूख हड़ताल से नहीं, बल्कि प्राकृतिक रूप से देहांत हुआ है।

श्री राम सरन दास : ये कपूरथला के निवासी श्री संत राम के पुत्र थे। कपूरथला में इन्होंने 'लिबर्टी' नामक अख़बार शुरू किया था जिसमें देश-भक्तों की खबरों को प्रमुखता के साथ उभारा जाता था। १९१५ ई. के प्रथम लाहौर साजिश केस में इनको मौत की सज़ा सुनाई गई थी, जो कि वायसराय ने उम्र-कैद में तबदील कर दी थी। सज़ा काटने के लिए इनको अंडमान भेज दिया गया।

स. रुलिया सिंघ : पंजाब के लुधियाना ज़िले के गाँव के निवासी ये भाई जगत सिंघ के पुत्र थे। यहाँ रोज़गार के साधन सीमित होने के कारण काम की तलाश में ये अमेरिका जा बसे। ओरेगन में बहुत-से पंजाबी खेतों में काम किया करते थे। इन्होंने वहाँ काम करना शुरू कर दिया। वहीं पर इनकी मुलाकात स. करतार सिंघ सराभा के साथ हुई, जो कि उस समय कैलेफोर्निया में पढ़ते थे और छुट्टी वाले दिन यहाँ आ जाते थे। ग़दर पार्टी के बुलावे पर ये पंजाब आए। आज़ादी के मिशन के दौरान

गिरफ़्तार कर इनको मौत की सज़ा सुनाई गई, जो कि बाद में उम्र-कैद में तबदील कर दी गई थी। सज़ा काटने के लिए इनको अंडमान में सेलुलर जेल भेज दिया गया था। मास्टर ऊधम सिंघ इनका जेल में ही देहांत होना बताते हैं। (किरती, मई १९३०)।

स. रूढ़ सिंघ : पंजाब के फ़िरोज़पुर ज़िले के गाँव चूहड़चक्क के निवासी स. अतर सिंघ के ये पुत्र थे। १८८० ई. में इनका जन्म हुआ। देश-विदेश से अलग-अलग जहाजों और ग्रुपों के माध्यम से गदरी हाँगकाँग इकट्ठा हुए और यहाँ से उन्होंने भारत जाने की योज़ना बनाई। योजनाबद्ध ढंग से आज़ादी का संघर्ष करने के लिए ग़दर पार्टी ने एक केंद्रीय समिति का गठन किया, जिसमें स. रूढ़ सिंघ को सदस्य चुना गया। तोशामारू जहाज़ के माध्यम से भारत पहुँचने पर इनको गिरफ़्तार कर लिया गया। प्रथम लाहौर साजिश केस में १३ सितम्बर, १९१५ ई. को इनकी जायदाद ज़ब्त करने और उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई। सज़ा काटने के लिए इनको अंडमान भेज दिया गया।

स. रोडा सिंघ : पंजाब के मोगा ज़िले के गाँव रोडा के निवासी स. वसावा सिंघ के ये पुत्र थे। बेरोजगारी दूर करने के लिए ये शंघाई चले गये थे जहाँ पर इन्होंने चौकीदार की नौकरी कर ली थी। एस. एस. मशीमामारू जहाज़ के माध्यम से ये कोलम्बो होते हुए पंजाब पहुँचे। ग़दर लहर में भाग लेने के कारण इनको गिरफ़्तार कर मुकद्दमा चलाया गया। प्रथम लाहौर साजिश केस में १३ सितम्बर, १९१५ ई. को इनकी जायदाद ज़ब्त करने और उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई। सज़ा काटने के लिए इनको अंडमान भेज दिया गया। मालवा इतिहास में इनका जेल में ही देहांत हो गया है।

स. लाल सिंघ : पंजाब के श्री अमृतसर साहिब ज़िले के गाँव भूरे के निवासी स. मीहां सिंघ के ये पुत्र थे। १८८५ ई. में इनका जन्म हुआ। ग़दर लहर में भाग लेने के कारण इनको गिरफ़्तार कर लिया गया। १३ सितम्बर, १९१५ ई. को प्रथम लाहौर साजिश केस में इनकी जायदाद ज़ब्त करने और उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई। सज़ा काटने के लिए इनको काला पानी भेज दिया गया था।

स. लाल सिंघ (द्वितीय) : पंजाब के लुधियाना ज़िले के गाँव नारंगवाल के निवासी स. उदे सिंघ के घर मार्च १८८७ ई. में इनका जन्म हुआ। ये तीसरी कैवलरी रेजिमेंट के सवार थे। ग़दर लहर के प्रभावाधीन इन्होंने साथियों सहित फरवरी १९१५ ई. में फ़िरोज़पुर छावनी पर हमला कर दिया, जो कि नाकाम कर दिया गया। गिरफ़्तार कर द्वितीय सप्लीमेंटरी लाहौर साजिश केस में इन पर मुकद्दमा चलाया गया। पहले उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई और फिर यह सज़ा १० वर्ष के कारावास में बदल कर २६ वर्षीय स. लाल सिंघ को अंडमान भेज दिया गया। सेलुलर जेल में उकेरे हुए नामों की सूची में इनका नाम शामिल नहीं है।

स. लक्खण सिंघ : १९१५ ई. में ग़दर लहर में भाग लेने के कारण सज़ा सुना कर इन्हें अंडेमान भेज दिया गया। unsung of freedom struggle in Anadamans,Who´s Who शीर्षकाधीन पुस्तक में इनका नाम आता है, परन्तु वहाँ उकेरे नामों की सूची में इनका नाम शामिल नहीं है।

स. वसावा सिंघ : ये श्री अमृतसर साहिब ज़िले के गाँव गिलवाली के निवासी स. मीहां सिंघ के पुत्र थे। ग़दर लहर में भाग लेने के कारण १३ सितंबर, १९१५ ई. के प्रथम लाहौर साजिश केस में इनको मौत की सज़ा हुई थी। वायसराय ने यह सज़ा उम्र-कैद में बदल कर इनको अंडेमान और निकोबार द्वीपसमूह में स्थापित सेलुलर जेल में भेज दिया गया था।

संत विसाख़ा सिंघ : श्री अमृतसर साहिब ज़िले

के गाँव ददेहर में १३ अप्रैल, १८७७ ई. को स. दिआल सिंघ और माता इंद कौर के घर पैदा हुए स. विसाख़ा सिंघ बचपन से ही धार्मिक वृत्ति के मालिक थे। अपनी पृष्टभूमि और विरासत के सम्बन्ध में अपनी आत्म कथा में लिखते हैं :

ज़िला हमारा अमृतसर।
सभ जन जानण सिफ़ती घर।
तरनतारन तहसील पछानो।
गुर पंचम का तीर्थ ठानो।
डाक घर वड्डी सरहाली।
बाबे जो गुरदित्त सिंघ वाली।
नगर ददेहर हमारा हीए।
संधू गोत्र आप लिख लईए।
मिहर सिंघ परदादा मेरा।
गुर दशमेश से अमृत ढेरा।
करदा रिहा गुरां मिल जंग।
पुत्र ओस के होए पंज।
पंजे होए बहुत जवान।
धर्म हेत खंडा वाहन।
इन मैं मेघ सिंघ जो चौथा।
मैं हां समझो उन का पोता।
दिआल सिंघ जी पिता हमारे।
होर पिता दे भाई चारे।
पंजे होए धरमी किरती।
भाउ भगत सी सुहणी बिरती।
इंद कौर हमारी माता।
इक भैण है दोइ भ्राता।
जायदाद है ज़ब्त हमारी।
गौरमिंट ने कीती सारी।
करे बेनती सिंघ वसाख।
बंधन तोड़े सतिगुर ख़ास।

स्वतंत्रता आंदोलन में ये बाबा विसाख़ा सिंघ नाम से जाने जाते हैं। गुरबाणी और गुरमति परंपराओं के धारक बाबा विसाख़ा सिंघ १९ वर्ष के हुए तो फ़ौज की नौकरी के अधीन चीन चले गए। चीन में नौकरी छोड़ कर अमेरिका गए तो वहाँ पर बाबा जवाला सिंघ के साथ मुलाकात हुई और दोनों ने मिल कर सरकार से ५०० एकड़ का फार्म लेकर खेती आरंभ कर दी। खेती अच्छी हुई तो अमेरिका में पढ़ाई के लिए जाने वाले विद्यार्थियों की सहायता हेतु गुरु नानक एजकेशनल सोसायटी की स्थापना कर ली। परशादा-पानी के साथ-साथ जरूरतमंद विद्यार्थियों की फ़ीस भरने की सहायता की जाती थी। स्टाकटन में गुरुद्वारा साहिब बनाने में योगदान दिया। ग़दर लहर के प्रभावाधीन गुरमति परंपराओं के साथ-साथ संघर्षमयी कवितायें लिखनी शुरू कर दी थीं। ग़दर लहर के प्रभावाधीन मन में देश की आज़ादी का जो संकल्प आया था, उसे पूरा करने के लिए भारत की तरफ चल पड़े। इनकी कार्यवाहियों की सूचना सरकार तक पहुँच गई और ७ जनवरी, १९१५ ई. को इनको मद्रास पहुँचते ही गिरफ़्तार कर लिया गया। पुलिस पहरे के अधीन लुधियाना लाकर गाँव में नज़रबंदी का हुक्म दे दिया गया। नज़रबंदी के दौरान भी इन्होंने अपने गदरी साथियों के साथ संपर्क स्थापित कर लिया था और पार्टी के आदेशाअनुसार काम करना आरंभ कर दिया था। फरवरी, १९१५ ई. के दौरान देश की आज़ादी के लिए किये जाने वाले हथियारबंद संघर्ष की भनक सरकार को लग गई और इन्हें गिरफ़्तार कर जेल में डाल दिया गया। १३ सितम्बर, १९१५ ई. को उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई और सज़ा काटने के लिए अंडमान जाने का हुक्म हो गया। पंजाब से पहले कलकत्ता ले जाया गया, जहाँ अलीपुर जेल में एक सप्ताह रखने के उपरांत ७ दिसंबर, १९१५ ई. को महाराजा नामक जहाज़ के माध्यम से अंडमान रवाना किया गया। तीन दिन बाद यह जहाज़ अंडमान पहुँचा जहाँ इनको सेलुलर जेल ले जाया गया। यहाँ

इनको जो काम करने के लिए दिया गया, उसका वर्णन करते हुए बाबा विसाखा सिंघ लिखते हैं :

अंडेमान दे अंदर जा असीं पहुँचे,
अंदर कोठियाँ बंद कराया सानूँ।
लक्कड़ मूंगली दे के साडे ताईं,
छिलका रख के कोल सुनाया सानूँ ।
पिच्छों खाणा निकम्मा ते बहुत थोड़ा,
ताड़ फाड़ दे नाल डराया सानूं।
देखो गुरमुखो रंग करतार चंगा,
अंडेमान दे विच दिखाया सानूँ।
चल के मुशक्कत 'विसाख' भाई,
भाणा उस महाराज ने वरताया सानूँ।

अंडमान जेल के कैदियों की दशा से सम्बन्धित जब भारत की राजनैतिक पार्टियों को पता चला तो उनके दबाव में गठित किए गए कमिशन की रिपोर्ट के आधार पर कई कैदियों की रिहाई के हुक्म जारी हो गए या उनको वहाँ से तबदील कर दिया गया। बाबा विसाख़ा सिंघ का स्वास्थ्य बिगाड़ जाने के कारण १४ अप्रैल, १९२० ई. को इनको वापस पंजाब भेज दिया गया था। पंजाब लाकर इनको गांव में ही रहने का आदेश जारी हो गया था। ये पहले श्री अमृतसर साहिब गए और वहाँ माथा टेक कर अपने गाँव वापस आ गए। गाँव के साथी इनको लेकर डॉक्टर बेली राम के पास लाहौर ले गए, जिसने इनका इलाज किया था।

जलियांवाला बाग़ की घटना का एक वर्ष पूरा होने के कारण पंजाब का माहौल बदला हुआ था। लोगों के मन में सरकार के विरुद्ध आक्रोश की लहर तीव्र हो गई थी। भले ही ये शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं थे, मगर पंजाब का माहौल देखने के बाद ये सरकार के ख़िलाफ़ 'सिक्ख लीग' द्वारा आयोजित समारोह में लाहौर पहुँच गए। इस समारोह में इन्होंने बहुत ही प्रभावशाली तकरीर करते हुए कहा कि जो गरीबों के दुख दूर करने और देश को आज़ाद कराने की बात करता है, वही सच्चा धर्मी है। इस सभा में इन्होंने जेलों में कैद देश-भक्तों की रिहाई और उनके परिवारों की सहायता करने के लिए 'देश-भक्त परिवार सहायक समिति' गठित करने का सुझाव दिया जो कि तुरंत स्वीकार कर लिया गया। इन्होंने जो फंड एकत्रित किया, वह अपने साथियों के केस लड़ने, उनको जेल में से छुड़ने और उनके परिवार की सहायता करने के लिए इस्तेमाल किया करते थे। 'किरती (श्रमिक) किसान लहर' की तरफ बाबा जी का झुकाव देख कर सरकार ने १९३१ ई. में इनको श्री अमृतसर साहिब की सीमाबंदी और १९३२ ई. में इनको दो वर्ष के लिए गाँव की सीमाबंदी में नजरबंद कर दिया।

गुरु-घर के प्रेम ने इनको गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध-सुधार के लिए चली लहरों की तरफ आकर्षित किया। गुरुद्वारा गुरु का बाग़ का मोर्चा और गुरुद्वारा पंजा साहिब के निर्माण के लिए किए जाने वाले शिलान्यास के लिए भेजे गए पाँच प्यारों में शामिल होना इनकी पंथक शख्सियत का प्रकटावा करती है। अक्तूबर १९३४ ई. में इनको श्री अकाल तख़्त साहिब का जत्थेदार चुन लिया गया। १९४० ई. १९४२ ई. के दौरान देश की आज़ादी में भाग लेने के लिए इनको फिर जेल जाना पड़ा। इसका एक बड़ा कारण यह था कि इस समय के दौरान दूसरी बड़ी जंग लग गई थी और सरकार देश-भक्ति में भाग लेने वालों को जेलों में बंद कर रही थी। देश आज़ाद होने के बाद १९५७ ई. में ये तरनतारन में अकाल प्रस्थान कर गए।

निम्नलिखित कैदियों का वर्णन स. जगजीत सिंघ ने अपनी पुस्तक 'ग़दर पार्टी लहर' में करते हुए कहा है कि इनको काला पानी की सज़ा सुनाई गई थी। इनसे सम्बन्धित और विवरण एकत्रित करने की ज़रूरत है। ये सभी कैदी अलग-अलग केसों से

सम्बन्धित हैं :—

प्रथम लाहौर सप्लीमेंटरी केस

१. स. अरजन सिंघ पुत्र स. लाल सिंघ, जगराओं, ज़िला लुधियाना

२. स. अतर सिंघ पुत्र श्री हीरा नंद, धीकमपुर, जेहलम

३. स. बोघ सिंघ पुत्र स. नत्था सिंघ, झाड़ साहिब, श्री अमृतसर साहिब

४. स. बिशन सिंघ पुत्र स. वसाख़ा सिंघ, वरपाल, श्री अमृतसर साहिब

५. स. दलीप सिंघ पुत्र स. हमीर सिंघ, फूलेवाल, लुधियाना

६. स. गंडा सिंघ पुत्र स. बहादर सिंघ, खबीर/ खापड़ खेड़ी, श्री अमृतसर साहिब

७. स. गंडा सिंघ पुत्र स. जवाला सिंघ, सुरसिंघ, तरनतारन

८. स. गुज्जर सिंघ पुत्र स. शाम सिंघ, भकना कलाँ, श्री अमृतसर साहिब

९. स. हरभजन सिंघ पुत्र स. फतह सिंघ, चविंडा, लुधियाना

१०. स. हरनाम सिंघ पुत्र स. नरायण सिंघ, गुज्जरवाल, लुधियाना

११. स. हरनाम सिंघ पुत्र स. भूप सिंघ, रसूलपुर, श्री अमृतसर साहिब

१२. स. हरनाम सिंघ पुत्र स. सुंदर सिंघ, काला कंठ संघिआं, कपूरथला

१३. स. इंदर सिंघ पुत्र स. फुम्मण सिंघ, शेख दौलत, लुधियाना

१४. स. जगत सिंघ पुत्र स. देवा सिंघ, गुज्जरवाल, लुधियाना

१५. स. जिंदर सिंघ पुत्र स. मंगल सिंघ, चौधरीवाला, श्री अमृतसर साहिब

१६. स. करम सिंघ पुत्र स. सुंदर सिंघ, कोटला अजनेर, लुधियाना

१७ . स. केसर सिंघ पुत्र स. मंगल सिंघ, सुरसिंघ, श्री तरनतारन/ लाहौर

१८. स. किरपा सिंघ पुत्र स. जवाहर सिंघ, टोंग माजरी, होशियारपुर

१९. स. लाभ सिंघ पुत्र स. राम सिंघ, चक्कवालियां दखिल, लाहौर

२०. स. लाभ सिंघ पुत्र स. बूड़ सिंघ, वलटोहा, तरनतारन

२१. स. महाराज सिंघ पुत्र स. निहाल सिंघ, कसेल, श्री अमृतसर साहिब

२२. स. महिंदर सिंघ पुत्र स. नरायण सिंघ, माजरी तेलियांवाली, लुधियाना

२३. स. मंगल सिंघ पुत्र स. मूल सिंघ, वलटोहा, तरनतारन

२४. स. मसतान सिंघ पुत्र स. महिताब सिंघ, नारंगवाल, लुधियाना

२५. स. नाहर सिंघ पुत्र स. ठाकर सिंघ, गुज्जरवाल, लुधियाना

२६. स. नत्था सिंघ पुत्र स. मंगल सिंघ, धुन, लाहौर

२६. स. पाखर सिंघ पुत्र स. भान सिंघ, ढुड्डीके, फ़िरोज़पुर

२८.स. पाला सिंघ पुत्र स. बग्गा सिंघ, ढुड्डीके, फ़िरोज़पुर

२९. स. राम सिंघ पुत्र स. साहिब सिंघ, फलेवाल, लुधियाना

३०. स. संता सिंघ पुत्र स. चूहड़ सिंघ, नंदपुर कलौड़, पटियाला

३१. नवाब सुलतान शाह पुत्र माघी शाह, भिक्खीविंड, लाहौर

३२. स. सुंदर सिंघ पुत्र स. रतन सिंघ, धौला नंगल, श्री अमृतसर साहिब

३३. स. ऊधम सिंघ पुत्र स. जीवन सिंघ, लाडूपुरा, गुरदासपुर

३४. स. वसाखा सिंघ पुत्र स. ईशर सिंघ, ददेहर, श्री अमृतसर साहिब

द्वितीय सप्लीमेंटरी लाहौर साजिश केस

१. स. बतन सिंघ पुत्र स. मेहर सिंघ, काहरी, होशियारपुर

२. फ़ज़ल दीन/ हुसेन पुत्र नूर हुसेन, फ़तहगढ़, होशियारपुर

३. स. सहरी सिंघ पुत्र स. भीखा सिंघ, छोटियां थोथा, फ़िरोज़पुर

४. स. केहर सिंघ पुत्र स. बघेल सिंघ, साहनेवाल, लुधियाना

मांडले (बर्मा) साजिश केस

१. श्री ज्ञान चंद पुत्र श्री सोहन लाल, गाँव मोरी मरल, ज़िला लाहौर

सहायक पुस्तक-सूची :—

१. अजमेर सिंघ, गदरी बाबे कौन सन? सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, २०१७.

२. ग़दर पार्टी दा इतिहास, देश-भक्त यादगार कमेटी , जलंधर, १९६९.

३. गुरदेव सिंघ दयोल, ग़दर पार्टी अते भारत दा कौमी आंदोलन, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, १९७०.

४. चरंजी लाल कंगणीवाल, गदरी बाबा जवाला सिंघ ठट्टियां : जीवन अते हत्थ-लिखतां, देश-भक्त यादगार कमेटी, जलंधर, २०१५.

५. जसवंत सिंघ जस्स, देश भगत बाबे, न्यू बुक कंपनी, जलंधर, १९७५.

६. जगजीत सिंघ, ग़दर पार्टी लहर, जगजीत सिंघ, तरनतारन, १९५५.

७. नरैण सिंघ, अकाली मोर्चे ते झब्बर, नेशनल बुक शाप, दिल्ली, १९६७.

८. बिकरम सिंघ घुंमण, गदरी बाबा विसाखा सिंघ, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, श्री अमृतसर, १९८२.

९. भाग सिंघ, बाबा जवाला सिंघ, कटरा रामगड़िया, श्री अमृतसर साहिब, १९३८.

१०. विसाखा सिंघ संत सिपाही जनेतपुरा, मालवा इतिहास, तीन भाग, गुरमति प्रचारक सिंघ सभा,मंडल तिहाड़ा, किशनपुरा, पंजाब, १९५४.

English Books

1. Baba Prithvi Singh Azad, The Legendary Crusader, An Autobiography, Bhartiya Vidya Bhavan, Bombay, 1987.

2. FAM Dass, The Andaman Islands, Good Shepherd Convent Press, Bangalore, 1937.

3. Fauja Singh, Eminent Freedom Fighters of Punjab, Punjabi University, Patiala, 1972.

4. _______ (Chief editor), Whos Who: Punjab Freedom Fighters, 2 vols., Punjabi University, Patiala, 2000, 2007.

5. Gauri Shankar Pandey, The Cellular Jail : The National Memorial, Sangeeta Publishing House, Port Blair, 1997.

6. Malwinderjit Singh Waraich, Revolutionaries in Dialogue: Lala Ram Saran and Shaheed Bhagat Singh, Unistar Books, 2007.

7. P.N. Chopra, Ed., Who's Who of Indian Martyrs, 2 vols., Ministry of Education and Youth Services, Govt. of India, New Delhi, 1969-73.

8. Parm Bakhshish Singh & R.K. Ghai, Martyrs of the Punjab, Punjabi University, Patiala, 1997.

9. Rashida Iqbal (comp. & ed.), Unsung Heroes of Freedom Struggle in Andamans: WhoÓs Who, Andaman & Nicobar Administration, Port Blair, 2004.

10. S.N. Aggarwal, The Heroes of Cellular Jail, Punjabi University, Patiala, 1995.

11. Shrikrishan Saral, Indian Rovolutionaries (1757-1961), vol. II, Ocean Books Pvt. Ltd., 1999.

12. The Ghadar Directory, eompiled by The Director, Intelligence Bureau, Home Department, Government of India, Pub. by Punjabi University, Patiala, 1997.

अख़बार/ पत्रिका

१. पंजाबी रतन, लुधियाना, २२ जुलाई, १९५५

२. किरती, फरवरी, १९३०

श्री गुरु रामदास जी के प्रकाश पर्व पर विशेष

हरि का नामु अंम्रित रसु चाखिआ

*-डॉ. परमजीत कौर**

माया-मोह रूपी संसार में लोभ के अधीन हुए मनुष्यों के लिए जीवन का मार्ग बहुत कठिन तथा दुखपूर्ण है। इस कलियुग में यदि कोई विकारों के जाल में से निकलना चाहता है तो वह मुक्ति कैसे प्राप्त कर सकता है? प्रतिदिन बढ़ती हुई मानसिक अशांति से छुटकारा कैसे प्राप्त किया जा सकता है? इस ज्वलंत समस्या का समाधान करते हुए श्री गुरु रामदास जी बताते हैं :

— कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई
किव छूटह हम छुटकाकी ।।
हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा
हरि जपिओ तरै तराकी।। (पन्ना ६६८)

— पाप बिकार मनूर सभि लदे बहु भारी।।
मारगु बिखमु डरावणा किउ तरीऐ तारी।।
नानक गुरि राखे से उबरे हरि नामि उधारी।।
(पन्ना १२४८)

— माइआ मोहु बिखमु है भारी।।
किउ तरीऐ दुतरु संसारी।।
सतिगुरु बोहिथु देइ प्रभु साचा
जपि हरि हरि पारि लंघावै जीउ।।
(पन्ना ९९८)

परमात्मा का नाम जहाज (नाव) है। गुरु का शबद केवट (मल्लाह) है। जिस मनुष्य ने गुरु की शरण में आकर प्रभु के नाम का सिमरन किया है वह संसार-समुद्र को पार करने के योग्य हो गया है :

— हरि हरि नामु पोतु बोहिथा
खेवटु सबदु गुरु पारि लंघईआ।।
(पन्ना ८३३)

हरि हरि सिमरहु अगम अपारा।।
जिसु सिमरत दुखु मिटै हमारा।। (पन्ना ६९८)

— हरि हरि तेरा नामु है दुख मेटणहारा।।
(पन्ना ७२५)

आज हम गलत रास्ते पर चल रहे हैं। परमात्मा के नाम-सिमरन से अधिक तीर्थ-यात्रा आदि फोकट कर्मों को महत्व दिया जा रहा है। मड़ी-मसाण आदि पर जाने से भी हमें कोई परहेज नहीं है। फोकट कर्मों को ही तनाव तथा भटकन दूर करने का साधन समझ बैठे हैं। श्री गुरु रामदास जी समझा रहे हैं कि ये सारे कर्म निष्फल हैं। अकाल पुरख वाहिगुरु का सिमरन करने के बिना मन के पीछे लगकर किये गए जप-तप, संयम, व्रत-पूजा आदि कर्म अहं रोग को दूर करने में सहायक नहीं होते। ये अहंकार को बढ़ाते हैं :

— जपु तप संजम वरत करे पूजा

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— फोन : ९८१२३-५८१८६*

मनमुख रोगु न जाई ।।
अंतरि रोगु महा अभिमाना दूजै भाइ खुआई ।।
(पन्ना ७३२)
— भरमि भूले अगिआनी अंधुले
भ्रमि भ्रमि फूल तोरावै ।।
निरजीउ पूजहि मड़ा सरेवहि
सभ बिरथी घाल गवावै ।। (पन्ना १२६४)
— नित नित काइआ मजनु कीआ
नित मलि मलि देह सवारे ।।
मेरे सतिगुर के मनि बचन न भाए
सभ फोकट चार सीगारे ।। (पन्ना ९८२)

इन कर्मों को करने से तृष्णा की आग शान्त नहीं होती, अन्दर का लोभ कम नहीं होता। जब तक अन्दर माया का मोह है, लोभ है, अहंकार है, मन प्रभु के साथ नहीं जुड़ सकता :

लोभ विकार जिना मनु लागा
हरि विसरिआ पुरखु चंगेरा ।।
ओइ मनमुख मूड़ अगिआनी कहीअहि
तिन मसतकि भागु मंदेरा ।। (पन्ना ७११)
— तपा न होवै अंद्रहु लोभी
नित माइआ नो फिरै जजमालिआ ।।
(पन्ना ३१५)

श्री गुरु रामदास जी वास्तविकता को दृढ़ करवाते हुये समझाते हैं कि यदि सारे तीर्थ-स्नान, व्रत, यज्ञ, पुण्य-दान आदि इकट्ठे मिलाकर तौलें, तो भी वे परमात्मा के नाम की बराबरी नहीं कर सकते। इन सबका फल नाम-सिमरन के फल से हल्का साबित होता है :

सभि तीरथ वरत जग पुंन तुोलाहा ।।
हरि हरि नाम न पुजहि पुजाहा ।।
हरि हरि अतुलु तोलु अति भारी
गुरमति जपि ओमाहा राम ।।३ ।।
सभि करम धरम हरि नामु जपाहा ।।
किलविख मैलु पाप धोवाहा ।। (पन्ना ६९९)

मानव-जन्म में परमात्मा का नाम ही वास्तविक खजाना है। प्रभु का नाम ही मनुष्य के साथ जाता है। नाम-सिमरन करने से सदाचारक उन्नति होती है, मनुष्य का आचरण ऊँचा हो जाता है, वह घटिया कर्म नहीं करता:

बिनु हरि नावै को बेली नाही
हरि जपीऐ सारंगपाणी हे ।। (पन्ना १०७०)

जिस सिमरन की बरकत से प्रभु के साथ प्रेम बना रहता है, वह सिमरन ही जप, तप, व्रत तथा पूजा है :

सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा
जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ ।।
बिनु हरि प्रीति होर प्रीति सभ झूठी
इक खिन महि बिसरि सभ जाइ ।।
(पन्ना ७२०)

कई जीवों के मन में यह शंका पैदा हो जाती है कि क्या केवल 'वाहिगुरु' गुरु-मंत्र का जाप ही करना चाहिए, गुरबाणी का पाठ नहीं करना चाहिए? असल में नाम-सिमरन के कई चरण हैं, कई पड़ाव हैं—— गुरबाणी का पाठ, गुण-कीर्तन करना, नाम-जाप, सिमरन तथा ध्यान। गुरबाणी का पाठ करना, सुनना तथा गुरबाणी द्वारा परमात्मा का गुण-कीर्तन करना परमात्मा के नाम-सिमरन का पहला चरण है। अर्थ-बोध के

साथ किया गया पाठ गुरमति का ज्ञान करवाता है। गुरमति के अनुसार जीवन बनाने के लिए गुरबाणी के अर्थों को समझना बहुत जरूरी है। गुरबाणी को पढ़ने तथा सुनने से मन की मैल दूर होती है, मन पवित्र हो जाता है :

गुरबाणी सुणि मैलु गवाए।।
सहजे हरि नामु मंनि वसाए।। (पन्ना ६६५)

जब गुरबाणी के पाठ तथा कीर्तन द्वारा प्रभु के गुणों का गायन किया जाता है तो परमात्मा के गुणों का ज्ञान हो जाता है । बार-बार गुण-कीर्तन करने से प्रभु के साथ प्रेम पैदा हो जाता है तथा प्रभु के गुणों को अपने अंदर बसाने का प्रयास किया जाता है। प्रभु के साथ जुड़े रहने के लिए, प्रेम को कायम रखने के लिए परमात्मा की उपमा करना, गुण-कीर्तन करना आवश्यक है।

जाप, सिमरन का दूसरा चरण है। इसमें गुरु-मंत्र या मूल-मंत्र जाप रसना द्वारा किया जाता है। रसना द्वारा जाप करना, सिमरन का बहुत महत्वपूर्ण भाग है। रसना द्वारा जप-तप कर ही नाम हृदय में बसता है :

आठ पहर जिहवे आराधि।।
पारब्रहम ठाकुर आगाधि।। (पन्ना १८०)

रसना द्वारा जपते-जपते जब ध्यान स्थिर हो जाता है तो अपने आप आवाज धीमी होती चली जाती है। अभ्यास द्वारा धीरे-धीरे नाम अंदर बस जाता है। मन में जाप शुरू हो जाता है। अब मन जपता है। श्री गुरु रामदास जी का फरमान है :

— मेरे मन जपि हरि हरि नामु मने।।
(पन्ना ९७६)
— जपि जगदीसु जपउ मन माहा।।
(पन्ना ६९९)
— हरि हिरदै जपि नामु मुरारी।।
(पन्ना ११३५)

जब बिना जीभ हिलाये, बिना उद्यम किए, अपने आप अंदर जाप चलता रहता है, इसे अजपा जाप कहते हैं :

— बिनु जिहवा जो जपै हिआइ।।
कोई जाणै कैसा नाउ ।। (पन्ना १२५६)
— अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि समाइ।।
(पन्ना १२९१)

जब अजपा जाप की अवस्था लगातार बनी रहे तो यह सिमरन बन जाता है। सिमरन करने वाले का ध्यान काम करते हुए भी हर समय प्रभु की याद में जुड़ा रहता है। सिमरन में लीन मनुष्य की ज्ञान-इंद्रियां शरीर के निर्वाह के लिए कार्य-विहार करती हैं, मगर ध्यान सदा प्रभु में जुड़ा रहता है।

तृष्णा की आग में जलते हुए मन को नाम-अमृत से ही शांत किया जा सकता है। गुरमति पर चलते हुए नाम-सिमरन करने से अन्दर की सारी तृष्णा, सारी भूख समाप्त हो जाती है :

— तिस की त्रिसना भुख सभ उतरै
जो हरि नामु धिआवै।। (पन्ना ४५१)
— जिन हरि जपिआ तिन फलु पाइआ सभि तूटे माइआ फंदे।। (पन्ना ८००)

परमात्मा का नाम अनेक किये गये पापों को हृदय में से निकाल देता है। श्री गुरु रामदास जी के अनुसार जो मनुष्य सेवक-भावना से अहंकार

त्याग कर प्रभु का नाम जपता है, वह पवित्र जीवन वाला बन जाता है :

मेरे मन जपि अहिनिसि नामु हरे ।।
कोटि कोटि दोख बहु कीने
सभ परहरि पासि धरे ।। (पन्ना ९७५)

यदि मन नाम-सिमरन में लग जाये तो दुर्मति तथा हउमै (अहं) दूर हो जाती है, आत्मिक स्थिरता बनी रहती है, दुख-क्लेश, लोभ-मोह का नाश हो जाता है, प्रभु के साथ प्रेम बन जाता है :

नाइ मंनिऐ दुरमति गई मति परगटी आइआ ।।
नाउ मंनिऐ हउमै गई सभि रोग गवाइआ ।।
नाइ मंनिऐ नामु ऊपजै सहजे सुखु पाइआ ।।
नाइ मंनिऐ सांति ऊपजै हरि मंनि वसाइआ ।।
नामक नामु रतंनु है गुरमुखि हरि धिआइआ ।।
(पन्ना १२४२)

नाम रूपी भोजन खाने से मन संतुष्ट हो जाता है। नाम-रस के स्वाद के समक्ष सारे स्वाद फीके प्रतीत होते हैं। हरि-रस सबसे मधुर है :

— हरि नामु हमारा भोजनु छतीह परकार
जितु खाइऐ हम कउ त्रिपति भई ।।
हरि नामु हमारा पैनणु जितु फिरि नंगे न होवह
होर पैनण की हमारी सरध गई ।।
(पन्ना ५९३)

— जितने रस अन रस हम देखे
सभ तितने फीक फीकाने ।।
हरि का नामु अंम्रित रसु चाखिआ
मिलि सतिगुर मीठ रस गाने ।। (पन्ना १६९)

जिनके हृदय में नाम बस जाता है, उनको लोगों की अधीनता की आवश्यकता नहीं रहती। प्रभु की कृपा से उनके सारे कार्य सम्पन्न हो जाते हैं :

जिना अंदरि नामु निधानु हरि
तिन के काज दयि आदे रासि ।।
तिन चूकी मुहताजी लोकन की
हरि प्रभु अंगु करि बैठा पासि ।। (पन्ना ३०५)

श्री गुरु रामदास जी स्पष्ट शब्दों में समझा रहे हैं कि गुरु ने हरि-नाम की दाति देकर मेरे मन को शीतलता प्रदान की है। मेरे अंदर से तृष्णा की भूख, माया की आग समाप्त हो गयी है। सिमरन करता हुआ मनुष्य अपने अन्दर से तीन गुणों का प्रभाव मिटाकर पवित्रात्मा बन जाता है। वह दुनिया के कार्य करता हुआ भी माया के बन्धनों से मुक्त रहता है :

मेरै मनि हरि हरि सांति वसाई ।।
तिसना अगनि बुझी खिन अंतरि
गुरि मिलिऐ सभ भुख गवाई ।। (पन्ना ७३२)
— जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ।।
जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ।।
(पन्ना ४४९)

परमात्मा के साथ जुड़ जाने वाले का मोह अन्य किसी के साथ नहीं रह जाता :

जिन सरधा राम नामि लगी
तिन्ह दूजै चितु न लाइआ राम ।।
जे धरती सभ कंचनु करि दीजै
बिनु नावै अवरु न भाइआ राम ।।
(पन्ना ४४४)

नाम जपने के साथ-साथ नाम को मन में बसाना बहुत जरूरी है। यदि रसना के साथ प्रभु

का नाम लिया जाता है, परंतु हृदय में छल–कपट है, विकार है, तो सिमरन का फल नहीं मिलता :

— हिरदै कपटु नित कपटु कमावहि
मुखहु हरि हरि सुणाइ ।।
अंतरि लोभु महा गुबारा तुह कूटै दुख खाइ ।।
(पन्ना ११९९)

— हरि हरि करहि नित कपटु कमावहि
हिरदा सुधु न होई ।।
अनदिनु करम करहि बहुतेरे सुपनै सुखु न होई ।।
(पन्ना ७३२)

गुरु पातशाह विस्तार से समझाते हैं कि हे भाई ! जिस मनुष्य का मन गुरु की मति लेकर रसमग्न होकर हरि–गुण गाने लगता है, वह मनुष्य उठते–बैठते, चलते–फिरते हर समय परमात्मा का नाम जपता रहता है। गुरु का उपदेश उसको विकारों से छुटकारे का सीधा रास्ता बताता रहता है :

— खरे खरोए बैठत ऊठत
मारगि पंथि धिआवैगो ।।
सतिगुर बचन बचन है सतिगुर
पाधरु मुकति जनावैगो ।।५ ।।
सासनि सासि सासि बलु पाई है
निहसासनि नामु धिआवैगो ।।
गुर परसादी हउमै बूझै
तौ गुरमति नामि समावैगो ।। (पन्ना १३०९)

— गुर कै सबदि मनु भेदीऐ
सदा वसै हरि नालि ।। (पन्ना ५४८)

संक्षेप में कह सकते हैं कि श्री गुरु रामदास जी की बाणी "हरि हरि अंम्रितु पी त्रिपतासे सभ लाथी भूख भुखानी" का संदेश देती हुई यह दृढ़ करवाती है कि गुरु के उपदेश पर चलता हुआ मनुष्य जीवन के लिए सही तथा स्पष्ट दिशा–निर्देश प्राप्त कर लेता है। जीवों के अंदर भड़क रही माया की, तृष्णा की आग गुरु–शबद के ज्ञान तथा विचार से ही शान्त की जा सकती है। गुरु–शबद को समझ कर, उसके अनुसार जीवन बना कर ही मनुष्य मानसिक तनाव तथा भटकन के समुद्र से बाहर निकल सकता है :

अंतरि अगनि सबल अति बिखिआ
हिव सीतलु सबदु गुर दीजै ।।
तनि मनि सांति होइ अधिकाई
रोगु काटै सूखि सवीजै ।। (पृष्ठ १३२५)

भट्ट गयंद जी श्री गुरु रामदास जी की स्तुति करते हुए कहते हैं कि श्री गुरु रामदास जी संसार सागर को पार करने के लिए जहाज हैं :

सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की
स्री रामदासु तारण तरणं ।। (पन्ना १४०२)

खबरनामा

सिक्ख एक अलग और निराली कौम इसकी पहचान और सभ्याचार नूतन है : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर : ३ सितंबर : सिक्ख एक अलग कौम है। इसकी पहचान निराली है, जो इसकी मौलिकता और विलक्षणता को दर्शाती है। इन शब्दों का प्रकटीकरण शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने आर.एस.एस. प्रमुख श्री मोहन भागवत के बयान का जवाब देते हुए किया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान गुरुद्वारा गुरूसर साहिब काउंके, जगराउं (जिला लुधियाना) में नवनिर्मित दरबार हाल के उद्घाटन समारोह में शामिल होने के लिए पहुँचे हुए थे।

इस अवसर पर एडवोकेट धामी ने कहा कि आए दिन आर.एस.एस के प्रमुख श्री मोहन भागवत अपने मन को झूठा आश्वासन के लिए भारत में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को हिंदू होने का फ़तवा जारी कर देते हैं। उन्होंने कहा कि भारत को हिंदू राष्ट्र कहने वाले इन लोगों को एक बार भारत और खासकर सिक्खों का इतिहास अवश्य पढ़ लेना चाहिए।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि भारत में रहने वाले सभी लोग हिंदू नहीं हैं। सिक्खों की अपनी अलग पहचान है, जिसे कोई भी धुंधला नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि भारत किसी एक धर्म का देश नहीं है। उन्होंने कहा कि सिक्ख हमेशा अपने धर्म की रिवायतों के अनुसार देश के लिए डटते हैं। हर संकट के समय सिक्खों के योगदान को कम करके नहीं आंका जा सकता। उन्होंने आर.एस.एस प्रमुख को विवादित बयान देने से संकोच करने की सलाह दी।

इसी दौरान गुरुद्वारा गुरूसर साहिब काउंके में नवनिर्मित बने दरबार हाल की एडवोकेट धामी ने संगत को बधाई दी। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी गुरुद्वारा साहिबान में संगत की भावनाओं के अनुसार कार्य करवाती रहती है। इसी के अंतर्गत ही गुरुद्वारा गुरूसर साहिब काउंके का नया दरबार तैयार करवाया गया है। उन्होंने दरबार तैयार करने की सेवा निभाने के लिए बाबा नरिंदर सिंघ और बाबा बलविंदर सिंघ श्री हजूर साहिब वालों का धन्यवाद किया।

इसी दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल) ने कहा कि आज ख़ुशी का दिन है जब कार सेवा के उपरांत गुरुद्वारा साहिब के तैयार हुए दरबार साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश किया गया है। उन्होंने कहा कि संगत ने इस सेवा में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया है और भविष्य में भी संगत की भावना के अनुसार आवश्यक सेवा जारी

रहेगी। भाई ग्रेवाल ने समारोह में उपस्थित समूह जत्थेबंदियों और संगत का धन्यवाद भी किया।

इसी दौरान नवनिर्मित दरबार हाल में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पवित्र स्वरूप सुशोभित करने की सेवा पाँच प्यारों के नेतृत्व में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी और बाबा नरिंदर सिंघ हजूर साहिब वालों ने निभाई। पवित्र हुकमनामा सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी गुरमिंदर सिंघ ने श्रवण करवाया।

जैतो के मोर्चे के प्रथम शताब्दी समागमों की पंथक रिवायतों के अनुसार हुई आरंभता

श्री अमृतसर : १४ सितंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा जैतो के मोर्चे की प्रथम शताब्दी के समागमों की आरंभता गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब, जैतो (जिला फरीदकोट) में एक विशाल गुरमति समागम आयोजित कर की गई। मुख्य शताब्दी समागम २१ फरवरी, २०२४ ई. को आयोजित किया जाएगा, जबकि इससे पहले शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से विभिन्न समागम और सेमिनार आयोजित किये जा रहे हैं। आज आरंभता के समागम के अवसर पर श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, तख़्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी सहित बड़ी संख्या में पंथ की प्रमुख शख़्सियतों ने हाज़िरी भरी और संगत के समक्ष विचार प्रस्तुत किए।

समागम के दौरान श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने जहाँ सिक्ख कौम के गौरवमयी इतिहास से प्रेरणा लेने की अपील की, वहीं पंथ-विरोधी शक्तियों से सचेत रहने के लिए भी कहा। उन्होंने कहा कि गुरबाणी के साथ-साथ सिक्ख इतिहास का नेतृत्व ही कौम को सही दिशा में ले जा सकता है और यही रास्ता राष्ट्रीय चुनौतियों के समाधान की तरफ जाता है। उन्होंने कहा कि अपने इतिहास और विरासत के साथ जुड़े रहने से सिक्ख विरोधी शक्तियां हमारी कौम का कुछ नहीं बिगाड़ सकती। ज्ञानी रघबीर सिंघ ने एक सदी पहले के मोर्चों के दौरान अकाली योद्धाओं की तरफ से दी गई कुर्बानियों को कौम के लिए भविष्यकालीन योजनाओं के लिए मार्गदर्शन बताते हुए अपनी पंथक संस्थाओं के विरुद्ध हो रहे झूठ प्रचार का मुँहतोड़ जवाब देने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि यदि सिक्ख पंथ की संस्थाएं मज़बूत होंगी तभी कौम मज़बूत रहेगी।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने अपने संबोधन के दौरान कहा कि अकाली योद्धाओं का इतिहास रक्त-रंजित रहा है, जिसकी उदाहरण जैतो का मोर्चा है। उन्होंने कहा कि इस मोर्चे के शहीद सिक्ख कौम का सरमाया

हैं। एडवोकेट धामी ने एलान किया कि जैतो के मोर्चे के दौरान जत्थे लेकर पहुँचने वाले सिक्खों और शहीदों के गाँवों व नगरों में शताब्दी को समर्पित समागम आयोजित किए जाएंगे तथा शहीदों के पारिवारिक सदस्यों को सम्मानित भी किया जायेगा। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि फरवरी २०२४ ई. में जैतो के मोर्चे की शताब्दी ख़ालसा पंथ द्वारा विशाल स्तर पर मनायी जाएगी।

इसी दौरान तख़्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने कहा कि सिक्ख कौम का इतिहास रहा है कि इसने शक्तिशाली मुग़ल और बर्तानवी हुकूमतों को कड़ी टक्कर दी, जिसकी रौशनी में आज भी पंथक संस्थाओं को कमज़ोर करने वाली साजिशों के विरुद्ध कौम को लामबंद होना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्खों की प्रमुख संस्था है, जिसके ख़िलाफ़ हो रहे प्रचार को रोकने के लिए संजीदा यत्न किए जाने चाहिए। ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने पंजाब में नशों की समस्या के ख़ात्मे के लिए यत्न करने के लिए भी प्रेरित किया।

समागम में उपस्थित शिरोमणि अकाली दल के सीनियर नेता डॉ. दलजीत सिंघ (चीमा) और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल) ने भी अपने संबोधन के दौरान जैतो के मोर्चे के शहीदों को याद किया तथा सिक्ख नौजवानी को अपने इस गौरवशाली इतिहास से दिशा लेने के लिए कहा।

इससे पहले गुरुद्वारा साहिब में श्री अखंड पाठ साहिब के भोग डाले गए और सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के हजूरी रागी जत्थों ने संगत को गुरबाणी कीर्तन श्रवण करवाया। पंथ-प्रसिद्ध कथावाचक भाई बंता सिंघ मुंडापिंड ने जैतो के मोर्चे के इतिहास से संगत को अवगत कराया और ढाडी जत्थों ने सिक्ख योद्धाओं की जोशीली वारें गायन कीं। समागम के दौरान अकाली मोर्चों के इतिहास को परिदर्शित करती चित्र-प्रदर्शनी आकर्षण का केंद्र रही। इस अवसर पर जैतो के मोर्चे से सम्बन्धित विशेष तौर पर प्रकाशित की गई पुस्तकें भी जारी की गईं। इस दौरान अमृत-संचार समागम भी करवाया गया और कीर्तन दरबार भी सजाया गया।

सुलतान-उल-कौम
सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

October 2023

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

बाबा खड़क सिंघ जी

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh
Date : 7-10-2023